पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय
PONDICHERRY UNIVERSITY

हिंदी विभाग / DEPARTMENT OF HINDI

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी
INTERNATIONAL SEMINAR

(ऑनलाइन/ONLINE)

हलधर नाग के राम-काव्य :
लोक चेतना, संस्कृति और पर्यावरण
Haldhar Nag's Ramayana based Poetry : Public Consciousness, Culture and Environment

05-06 मई/May, 2022

संगोष्ठी का विस्तृत कार्यक्रम
Detailed Programme of the Seminar

पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय
PONDICHERRY UNIVERSITY

हिंदी विभाग / DEPARTMENT OF HINDI

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी / INTERNATIONAL SEMINAR (ऑनलाइन / ONLINE)

हलधर नाग के राम-काव्य : लोक चेतना, संस्कृति और पर्यावरण

Haldhar Nag's Ramayana based Poetry : Public Consciousness, Culture and Environment

उद्घाटन समारोह/Inaugural Ceremony

*Date/दिनांक:**मई 5 May 2022** ,Time/समय: पूर्वाह्न/FN **बजे 10/am***

Google Meet Link : meet.google.com/art-tauu-pmo

उद्घाटन समारोह का कार्यक्रम

	पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय गान	10.00	10.02	2
	डॉ. सी. जय शंकर बाबु द्वारा स्वागत भाषण एवं कुलपति महोदय का परिचय	10.03	10.04	2
	पुस्तक विमोचन - माननीय कुलपति तथा अतिथियों द्वारा	10.04	10.05	1
	माननीय कुलपति **आचार्य गुरमीत सिंह जी** का अध्यक्षीय भाषण	10.06	10.20	15
	लोक कविरत्न श्रीहरधर नाग जी का गेयात्मक परिचय -**डॉ. कृष्णा आर्य जी**	10.21	10.25	5
	संबलपुरी-कोसली के **कविवर हलधर नाग जी** (पद्मश्री) का उद्बोधन	10.26	10.40	15
	हलधर नाग जी के उद्बोधन का आशु अनुवाद - **श्री अशोक पूजाहारी जी**	10.41	10.50	10
	डॉ. सी. जय शंकर बाबु द्वारा अतिथियों का परिचय	10.51	10.55	5
	मुख्य अतिथि **श्री भोला नाथ शुक्ला जी**, पूर्व अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, एमसीएल, संबलपुर (ओडिशा) का वक्तव्य	10.56	11.10	15
	विशिष्ट अतिथि **प्रो. नंदिनी साहू जी**, पूर्व निदेशक, विदेशी भाषा पीठ एवं संप्रति प्रोफ़ेसर, मानविकी विद्यापीठ, इं.गा.रा.मु.वि., नई दिल्ली का वक्तव्य	11.11	11.25	15
	विशिष्ट अतिथि **डॉ. लक्ष्मीनारायण पाणिग्राही जी** का बीज भाषण	11.26	11.45	20
	मानविकी विद्यापीठ के अधिष्ठाता **प्रो.क्लेमेंट लूर्द जी** का संवर्धना उद्बोधन	11.46	11.50	5
	अनुसर्जक विमर्शकार **श्री दिनेश कुमार माली जी** का वक्तव्य	11.51	11.55	5
	आभार ज्ञापन - डॉ. पद्मप्रिया द्वारा	11.56	12.00	5

सत्र-संचालन - डॉ. सी. जय शंकर बाबु , अध्यक्ष (प्र.), हिंदी विभाग, पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय

पांडिचेरी विश्वविद्यालय
PONDICHERRY UNIVERSITY
हिंदी विभाग / DEPARTMENT OF HINDI

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी / INTERNATIONAL SEMINAR (ऑनलाइन / ONLINE)

हलधर नाग के राम-काव्य : लोक चेतना, संस्कृति और पर्यावरण

Haldhar Nag's Ramayana based Poetry : Public Consciousness, Culture and Environment

दिनांक / Date : 05-06 मई/May, 2022

Google Meet Link : meet.google.com/art-tauu-pmo

द्वितीय सत्र / Second Session

*Date/दिनांक:**मई 5 May 2022** ,Time/समय:**1 2 बजे/pm***

विशिष्ट वक्ताओं के अभिभाषण

	वक्ताओं का परिचय	12.01	12.05	5
1.	डॉ. द्वारिका नाथ नायक	12.06	12.20	15
2.	डॉ. राजेश श्रीवास्तव	12.21	12.35	15
3.	डॉ. आनंद सिंह	12.36	12.50	15
4.	डॉ. प्रभा पंत	12.51	1.05	15
	आभार ज्ञापन	1.05	1.10	5

भोजनावकाश (1.10 से 2.00 तक)

तृतीय सत्र / Third Session

*Date/दिनांक:**मई 5 May 2022** ,Time/समय: **2.10 बजे/pm***

विशिष्ट वक्ताओं के अभिभाषण

	वक्ताओं का परिचय	2.00	2.10	10
1.	डॉ. संध्या सिंह	2.11	2.25	15
2.	डॉ. हरिहर झा	2.26	2.40	15
3.	श्री विपिन गुप्ता	2.41	2.55	15
4.	डॉ. बुल्टी दास	2.56	3.10	15
	आभार ज्ञापन	3.10	3.15	5

पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय
PONDICHERRY UNIVERSITY

हिंदी विभाग / DEPARTMENT OF HINDI

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी / INTERNATIONAL SEMINAR (ऑनलाइन / ONLINE)

हलधर नाग के राम-काव्य : लोक चेतना, संस्कृति और पर्यावरण

Haldhar Nag's Ramayana based Poetry : Public Consciousness, Culture and Environment

दिनांक / Date : 05-06 मई/May, 2022

Google Meet Link : meet.google.com/art-tauu-pmo

चतुर्थ सत्र / Fourth Session

Date/दिनांक: ***मई 5 May 2022*** *,Time/समय:* ***3.15 बजे/pm***

विशिष्ट वक्ताओं के अभिभाषण

	वक्ताओं का परिचय	3.15	3.20	5
1.	डॉ. राम प्रसाद कुशवाहा	3.21	3.35	15
2.	डॉ. आरती पाठक	3.36	3.50	15
3.	श्रीमती करुणालक्ष्मी	3.51	4.05	15
4.	डॉ. सुजीत कुमार प्रूसेठ	4.06	4.20	15
5.	प्रो. शांतनु सर	4.21	4.35	15
6.	श्री सुरेंद्र नाथ	4.36	4.50	15
	आभार ज्ञापन एवं अगले दिन के कार्यक्रम की उद्घोषणाएँ	4.51	5.00	10

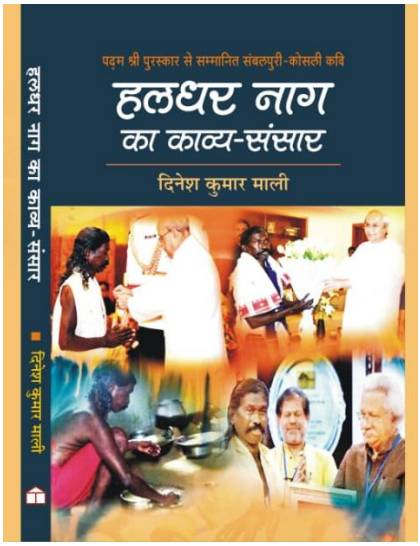

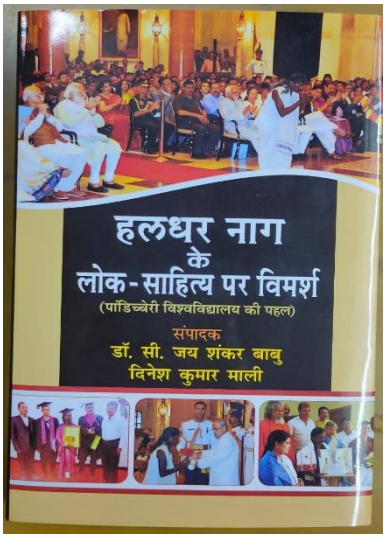

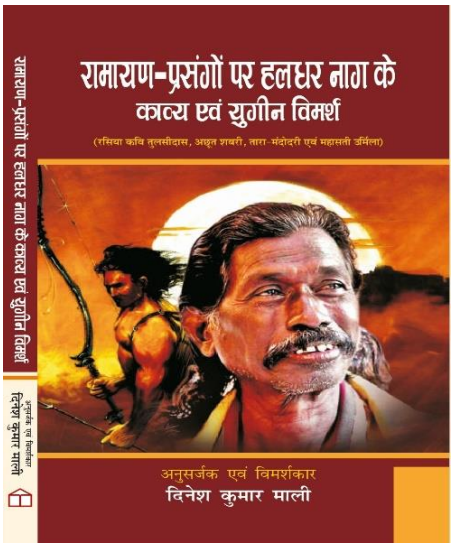

पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय
PONDICHERRY UNIVERSITY
हिंदी विभाग / DEPARTMENT OF HINDI

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी / INTERNATIONAL SEMINAR (ऑनलाइन / ONLINE)

हलधर नाग के राम-काव्य : लोक चेतना, संस्कृति और पर्यावरण

Haldhar Nag's Ramayana based Poetry : Public Consciousness, Culture and Environment

दिनांक / Date : 05-06 मई/May, 2022

Google Meet Link : meet.google.com/art-tauu-pmo

पंचम सत्र / Fifth Session

Date/दिनांक: ***6 मई/May 2022*** *,Time/समय:* ***10.00 बजे/pm***

विशिष्ट वक्ताओं के अभिभाषण

	स्वगत व वक्ताओं का परिचय	10.00	10.10	10
1.	डॉ. सुधीर सक्सेना	10.11	10.25	15
2.	डॉ. विमला भंडारी	10.26	10.35	15
3.	डॉ. प्रीति लता	10.36	10.50	15
4.	डॉ. चितरंजन मिश्रा	10.51	11.05	15
5.	श्री सुशांत कुमार मिश्रा	11.06	11.20	15
6.	डॉ. सुमेर खजूरिया	11.21	11.35	15
	आभार ज्ञापन	11.36	11.40	5

षष्ठ सत्र / Sixth Session

Date/दिनांक: ***6 मई/May 2022*** *,Time/समय:* ***11.40 बजे/pm***

विशिष्ट वक्ताओं के अभिभाषण

	वक्ताओं का परिचय	11.40	11.45	5
1.	श्रीमती अर्चना उपाध्याय	11.46	12.00	15
2.	डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह	12.01	12.15	15
3.	श्री उत्पन्न कुमार भोई	12.16	12.30	15
4.	डॉ. ए.भवानी	12.31	12.45	15
5.	श्री अनिल दास	12.46	1.00	15
	आभार ज्ञापन	1.00	1.05	5

भोजनावकाश (1.05 से 2.00 तक)

पांडिचेरी विश्वविद्यालय
PONDICHERRY UNIVERSITY
हिंदी विभाग / DEPARTMENT OF HINDI

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी / INTERNATIONAL SEMINAR (ऑनलाइन / ONLINE)

हलधर नाग के राम-काव्य : लोक चेतना, संस्कृति और पर्यावरण

Haldhar Nag's Ramayana based Poetry : Public Consciousness, Culture and Environment

दिनांक / Date : 05-06 मई/May, 2022 Google Meet Link : meet.google.com/art-tauu-pmo

सप्तम सत्र / Seventh Session

Date/दिनांक: ***6 मई / May 2022*** *,Time/समय:* ***2.00 बजे/pm***

विशिष्ट वक्ताओं के अभिभाषण

	वक्ताओं का परिचय	2.00	2.05	5
1.	डॉ. दिलीप मेहरा	2.06	2.20	15
2.	डॉ. कृष्णा कुमारी आर्य	2.21	2.35	15
3.	डॉ. सी. कामेश्वरी	2.36	2.50	15
4.	प्रो. अमर ज्योति	2.51	3.05	15
5.	डॉ. अनुपमा तिवारी	3.05	3.20	15
6.	डॉ. सुनीता यादव	3.21	3.35	15
7.	डॉ. नीलम हेमंत वीरानी	3.36	3.50	15
8.	श्री अशोक पूजाहारी	3.51	4.05	15
	आभार ज्ञापन	4.05	4.10	5

अष्टम सत्र / Eighth Session

Date/दिनांक: 6 मई/May, 2022 Time/समय: 4.10 बजे/pm

शोध-प्रपत्र वाचन

सत्र की अध्यक्षता - डॉ. सी. जय शंकर बाबु

1.	श्री अमन ऋषि साहू	4.11	4.20		10
2.	श्री राजीव कुमार बेज	4.21	4.30		10
3.	सुश्री अनामिका चौधरी	4.31	4.40		10
4.	सुश्री एस. वैष्णवी	4.41	5.00		10
5.	डॉ. भवानी सिंह, सहायक आचार्य, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय	5.01	5.10		10
6.	सुश्री सोनिया	5.11	5.20		10
	अध्यक्षीय अभ्युक्तियाँ	5.21	5.25		5
	समापन समारोह - प्रतिभागियों के अभिमत	5.26	5.55		30
	आत्मीय वचन एंव आभार ज्ञापन - श्री विक्रम द्विवेदी, प्रकाशक	5.56	6.00		5

पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य गुरमीत सिंह जी

संक्षिप्त परिचय

पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय जो कि एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है के हमारे माननीय कुलपति महोदव आचार्य गुरमीत सिंह जी रसायनशास्त्र प्रतिष्ठित वैज्ञानिक होने के साथ-साथ कुशलतम अकादमिक प्रशासक हैं। विगत तीन वर्षों पांडिच्चेरी विश्वविद्याल के सर्वागीण विकास के निरंतर योगदान दे रहे हैं। वे एक कुशल प्रशासक हैं । प्रेरक शिक्षाविद्, गतिशील व प्रतिभावान अनुसंधाता हैं ।

जंग विज्ञान और स्मार्ट सामग्री (corrosion science and smart materials) के क्षेत्र में आप एक अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठित विशेषज्ञ है। कुशल प्रशासक के रूप में आपने 2005-2010 तक दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रॉक्टर (Proctor), रसायन विज्ञान विभाग के अध्यक्ष के रूप में 2014-17 तक कार्यकारी परिषद के सदस्य 2005 2010 तक संभाला है। इनके अलावा दिल्ली विश्वविद्यालय में कई अन्य प्रशासनिक पदों पर आपने सेवाएं दी हैं जिनमें देशबंधु कॉलेज में 1997-1999 तक विशेष कार्य अधिकारी OSD के रूप यानी प्राचार्य के पद भी सेवाएँ दी हैं।

2011-2012 के दौरान आचार्य गुरमीत सिंह जी मे लूनगवा विश्वविद्यालय ताइपी में अध्ययनपीठ के प्रोफेसर के रूप में अध्यापन व अनुसंधान कार्य किया है, सहयोगात्मक अनुसंधान के लिए विशेष आमंत्रण पर वैज्ञानिक के रूप में आपने हंगरी, जापान, जर्मनी, इटली, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर, कोरिया, थाईलैंड, केन्या में विभिन्न अकादमिक कार्यभार संभाला था आप फिलहाल जापान प्रगत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (Japan Advanced Institute of Science & Technology), इशिकावा, जापान के विजिटिंग प्रोफेसर भी हैं।

साढ़े चार दशकों के लंबा शैक्षणिक अनुभव रहा है। प्रेरक शिक्षक और अनुसंधान मार्गदर्शक के रूप में आचार्य गुरमीत सिंह जी ने 14 एम. फिल और 50 पीएच.डी. निर्देशित किए हैं। आपके अनुसंधान और मार्गदर्श की कई उपलब्धियों है. कई अनुसंधान कार्यों को अंतराष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन में श्रेष्ठ अनुसंधान कार्यों के रूप में ख्याति मिली है। पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय में माननीय कुलपति पदभार ग्रहण करते समय तक आपने व्यक्तिगत रूप से 7.5 करोड़ रुपये से अधिक की 9 प्रमुख अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं की देखरेख कर रहे थे। आपके 150 अधिक अनुसंधान प्रपत्र प्रकाशित हुए हैं जिनमें से अधिक उच्च-प्रभाव वाली अंतरराष्ट्रीय (high-impact international journals) में शामिल हुए हैं। आचार्य गुरमीत सिंह अपने क्षेत्र के प्रतिष्ठित में सबसे अधिक उद्धृत किए गए हैं। वे कई सम्मानों से विभूषित हैं, जिनकी सूची यहाँ शामिल नहीं की गई है ।

पद्मश्री डॉ. हलधर नाग

मैं तुम्हें खत लिख रहा हूँ, हलधर
तुम्हें खत लिख रहा हूँ, हलधर

सम्बलपुर की मिट्टी से उगा हुआ यह आदिवासी कवि कोसली जुबान में लिखता है। इसे 2016 में पदम श्री से सम्मानित किया गया। जब यह कवि अपने गाँव की जमीन पर चलता है तो लगता है पूरे ग्लोब पर चलता है और जब यह खुद से कहता है, यही लगता है इस ग्लोब पर बसे हर इंसान से बातें करता है। वह खुद से कहता है—समुद्र से निथारी/माँ की छाती से बही/अमृत की बूंद/कवि की कलम पर उतरी है।

मैं तुम्हें खत लिख रहा हूँ, हलधर
तुम्हें खत लिख रहा हूँ, हलधर

—गुलजार (यू ट्यूब 'वर्चुअल भारत')

ऐसे जीवित किंवदंती को ओड़िशा साहित्य अकादमी पुरस्कार (2014), पद्मश्री पुरस्कार (2016), लाइफ अचीवमेंट सम्मान (2017) से सम्मानित किया जाना हम सभी के लिए गर्व और गौरव का विषय है। बात यह है कि उन्होंने जो भी कविताएं और 20 महाकाव्य अभी तक लिखे हैं, वे उन्हें जुबानी याद हैं। अब संबलपुर विश्वविद्यालय में उनके लेखन के एक संकलन 'हलधर ग्रन्थावली-2' को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है। सादा लिबास, सफेद धोती, गमछा और बनियान पहने, नाग नंगे पैर ही रहते हैं। संबलपुरी भाषा के बहुत सारे कवि उन्हें अपना आदर्श मानकर उनकी काव्य-शैली का अनुकरण कर रहे हैं, जिसे साहित्यिक भाषा में 'हलधर धारा' कहा जाता है। यहां तक कि संबलपुर विश्वविद्यालय में कई शोधार्थी उन पर पीएचडी कर रहे हैं। अपनी कविताओं के माध्यम से हलधर नाग ने पश्चिम ओड़िशा की बहु उपेक्षित भाषा संबलपुरी-कोसली में प्राण फूंक कर नई पहचान प्रदान की है।

प्रमुख कृतियाँ : 1. लोकगीत 2.सम्पर्द 3. कृष्णगुरु 4. महासती उर्मिला 5. तारा मन्दोदरी 6.अछिया 7. बछर 8. शिरी समलाई 9. वीर सुरेन्द्र साई 10. करमसानी 11. रसिया कवि (तुलसीदास की जीवनी) 12. प्रेम पाइछन 13. राति 14. चएत् र सकाल् आएला 15. शबरी 16. माँ 17. सतिआबिहा 18. लक्ष्मीपुराण 19. सन्त कवि भीमभोई 20. ऋषि कवि गंगाधर 21. भाव 22. सुरुत 23. हलधर ग्रन्थावली-1 (फ्रेण्ड्स पब्लिशर्स, कटक) 24. हलधर ग्रन्थावली-2 (सम्बलपुर विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित, पाठ्यक्रम में सम्मिलित)।

लोक कवि रत्न श्री हलधर नाग जी

कवि हलधर नाग का नाम आज भारतीय साहित्य में किसी परिचय का मोहताज नहीं है। अपनी कविताओं के माध्यम से हलधर नाग ने पश्चिम ओड़िशा की बहु उपेक्षित भाषा संबलपुरी-कोसली में प्राण फूंक कर नई पहचान प्रदान की है। वे सादा जीवन उच्च उच्च विचार के जीवंत उदाहरण हैं । वे सादा जीवन उच्च उच्च विचार के जीवंत उदाहरण हैं । हलधर वैश्विक चिंतन के साथ स्थानीय स्तर पर योगदान करने वाले मौखिक परंपरा के मधुर कवि रत्न हैं । उन्होंने जितनी भी कविताएं और 20 महाकाव्य अभी तक लिखे हैं, वे सब उन्हें ज़ुबानी याद हैं। जहाँ भी वे अपनी कविता गाते हैं, वहाँ हज़ारों काव्य-प्रेमी इकट्ठे हो जाते हैं । उनकी इस लोकप्रियता की वजह से सहज ही वे 'लोककवि रत्न' के नाम से प्रसिद्ध हैं। अपने व्यक्तित्व-कृतित्व से वे इतने प्रभावशाली बन गए हैं कि 'पदमश्री' उपाधि वरण करना, विश्वविद्यालयों की मानद डॉक्टरेट का अलंकरण अपने आप संभव हो गया । संबलपुरी भाषा के बहुत सारे कवि उन्हें अपना आदर्श मानकर उनकी काव्य-शैली का अनुकरण कर रहे हैं, जिसे साहित्यिक भाषा में 'हलधर धारा' कहा जाता है।

हलधर नाग की प्रमुख कृतियाँ

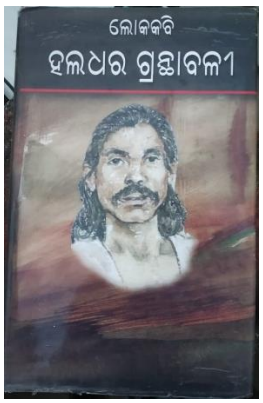

1. लोकगीत 2.सम्पर्द 3.कृष्णगुरु 4. महासती उर्मिला 5. तारा मन्दोदरी 6.अछिया 7 बछर 8 शिरी समलाई 9.वीर सुरेन्द्र साई 10. करमसानी 11.रसिया कवि (तुलसीदास की जीवनी) 12.प्रेम पाइछन 13. राति 14. चएत् र सकाल् आएला 15. शबरी 16. माँ 17. सतिआबिहा 18. लक्ष्मीपुराण 19. सन्त कवि भीमभोई 20. ऋषि कबि गंगाधर 21 भाव 22. सुरुत 23. हलधर ग्रंथावली-1 (फ्रेंड्स पब्लिशर्स, कटक) 24.हलधर ग्रंथावली -2 (संबलपुर विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित)

कवि हलधर नाग की कृतियों के अनुवाद

हलधर नाग की संबलपुरी काव्यों और कविताओं का श्री सुरेंद्र नाथ ने अंग्रेज़ी में प्रोजेक्ट काव्यांजलि के तहत 'काव्यांजलि' के नाम से पाँच पुस्तकें जेनिथ पब्लिशर्स, कटक से प्रकाशित हुई हैं । हिंदी के लेखक, ओड़िया हिंदी के बीच सेतु दिनेश कुमार माली ने उनकी काव्य-कविताओं का हिंदी में अनुवाद 'हलधर नाग का काव्य-संसार' के नाम से किया है, यह कृति पांडुलिपि प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई है। इस कृति का विमोचन पिछले पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति आचार्य गुरमीत सिंह ने किया था । तदवसर पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय ने किया था । संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेखों का संग्रह हलधर नागर के लोक-साहित्य पर विमर्श (संपादक - डॉ. सी. जय शंकर बाबु, दिनेश कुमार माली) प्रकाशित हुआ है ।

हलधर नाग के राम-काव्य

कवि हलधर नाग की सर्जना के अभिन्न अंग के रूप में रामायण केंद्रित रचनाओं को भी हम देख सकते हैं । उनके तीन काव्य रामायण पर केंद्रित हैं - 'आछिया' (अछूत), 'तारामंदोदरी', 'महासती उर्मिला' । इनके अलावा लोकभाषा अवधी में लोकप्रिय रामायण रामचरितमानस के सृजक संत तुलसीदास जी की जीवनी पर केंद्रित काव्य रचना 'रसिया कवि' की सर्जना की है ।

भाई श्री दिनेश माली ने हलधर नाग के इन चारों काव्यों (तीन उपजीव काव्य तथा तुलसीदास जी की जीवनी पर केंद्रित एक जीवनगाथा काव्य) का हिंदी अनुवाद **'रामायण-प्रसंगों पर हलधर नाग के काव्य'** के शीर्षक एक साथ चारों काव्यों का संकलन प्रस्तुत किया है । यह हिंदी ही नहीं समूची हिंदी दुनिया के लिए एक विशिष्ट वरदान है । ओड़िशा के संबलपुर अंचल के हलधर नाग जी की अमृत बोली संबलपुरी-कोसली की अमृत काव्यधारा हिंदी में उपलब्ध कराने का यह दूसरा बृहद् प्रयास है ।

हलधर द्वारा विभिन्न काव्यों की सर्जना, उसमें उनकी वैचारिक आयामों के महत्व के परिप्रेक्ष्य में उनके काव्यों का अध्ययन, अनुशीलन, आलोचनात्मक विश्लेषण, तुलना की बड़ी प्रासंगिकता है ।

हलधर नाग के रामायण-प्रसंगों पर आधारित काव्यों के आलोक में उन काव्यों में लोक-चेतना, समाज, संस्कृति और पर्यावरण विषयों पर चिंतन - अनुचिंतन के लिए इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा 5-6 मई, 2022 को किया गया है, जिसमें देश-विदेश के कई विद्वान बड़े उत्साह से शामिल हो रहे हैं ।

इस संगोष्ठी के संयोजक पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सी. जय शंकर बाबु हैं । ओडिया साहित्य के विराट अनुवादक श्री दिनेश कुमारी माली और कई ओडिया साहित्यकार, शिक्षक, अनुसंधाता आदि का इस संगोष्ठी के आयोजन में आत्मीय सहयोग मिला है । वे सब इस संगोष्ठी में विशिष्ट वक्ताओं के रूप में शामिल हो रहे हैं । इनके अलावा देश-विदेश के कई विद्वान इस संगोष्ठी में शामिल हो रहे हैं, जिनका संक्षिप्त परिचय अगले पृष्ठों में है ।

हलधर नाग के राम-काव्य :
लोक चेतना, संस्कृति और पर्यावरण

Haldhar Nag's Ramayana based Poetry :
Public Consciousness, Culture and Environment

05-06 मई/May, 2022

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में विचारणीय मुद्दे

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में कई विचारणीय मुद्दे हैं, उनमें कुछ इस प्रकार हैं -

- हलधर नाग के राम-काव्यों में आधुनिक चेतना
- हलधर नाग के राम-काव्यों में पर्यावरण
- हलधर नाग के राम-काव्यों की अन्य भाषाओं के राम-काव्यों से तुलना
- हलधर के राम-काव्यों में लोक-चेतना का स्वरूप
- हलधर के राम-काव्यों में चित्रित संस्कृति
- हलधर के आछिया काव्य का अनुशीलन
- हलधर के तारा-मंडोदरी काव्य का अनुशीलन
- हलधर के महासति उर्मिला काव्य का अनुशीलन
- हलधर नाग के रसिया कवि काव्य का अनुशीलन
- हलधर नाग के राम-काव्यों की वर्तमान प्रासंगिकता

श्री हलधर नाग जी की संबलपुरी-कोसली की रचनाओं में से कुछ रचनाओं के आवरण साभार प्रस्तुत हैं

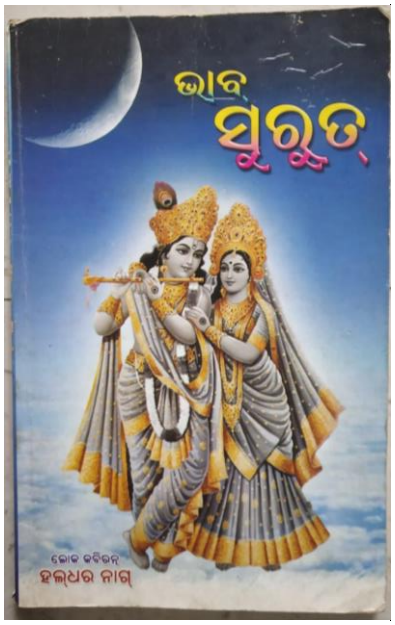

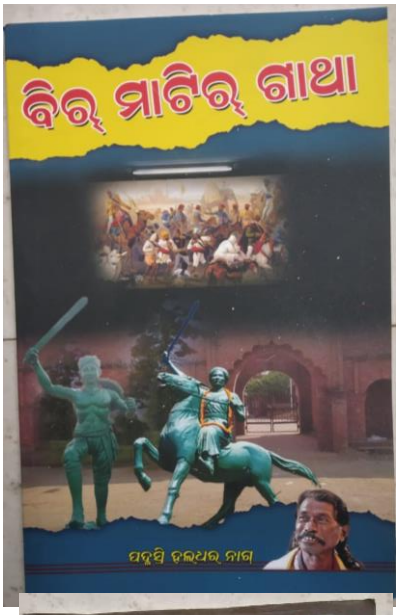

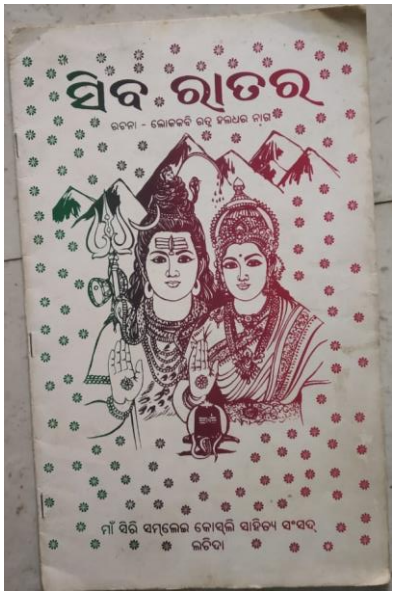

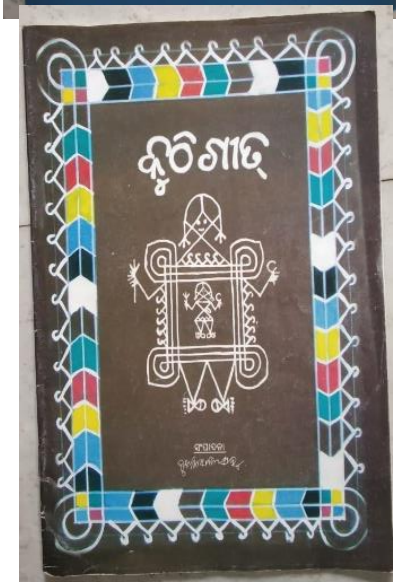

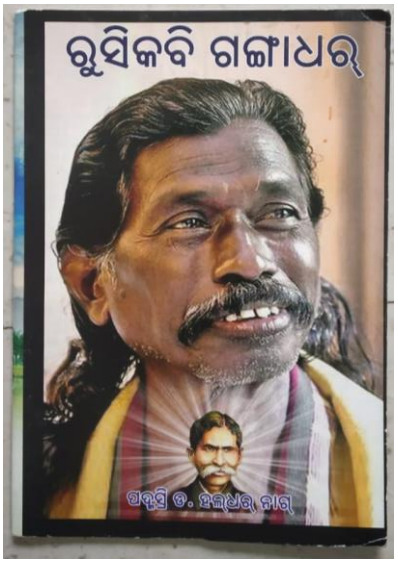

श्री हलधर नाग जी की रचनाओं के अनुवाद और विमर्श पर केंद्रित कुछ कृतियाँ व पत्रिका विशेषांक

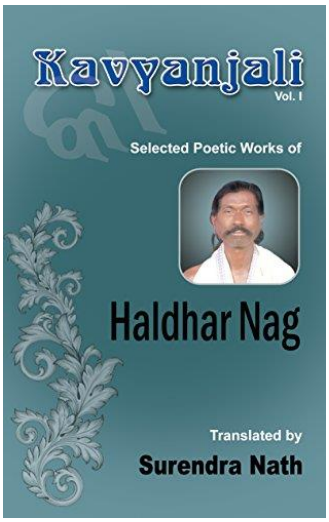

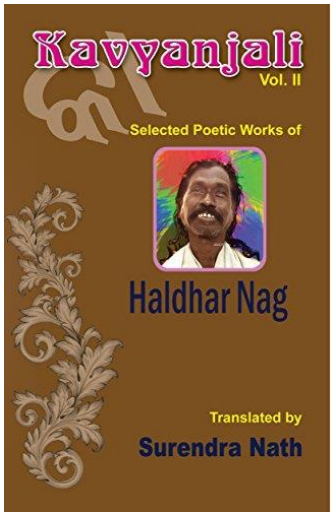

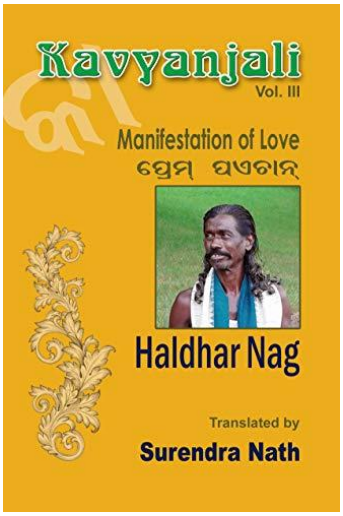

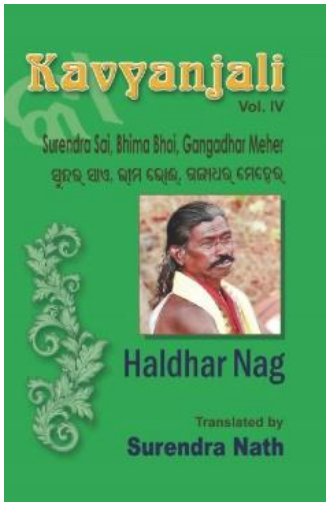

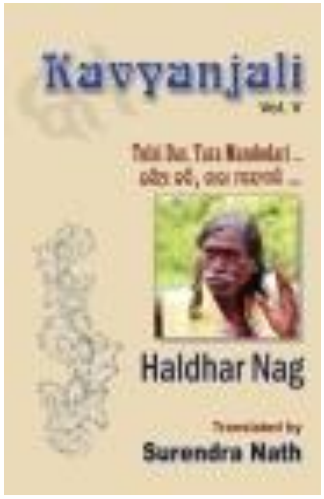

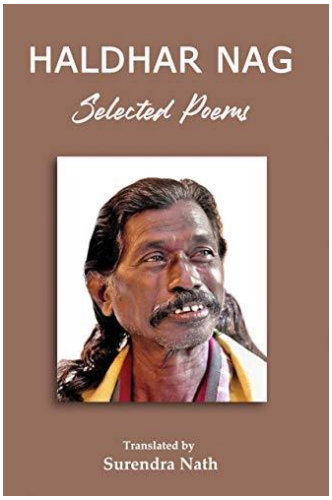

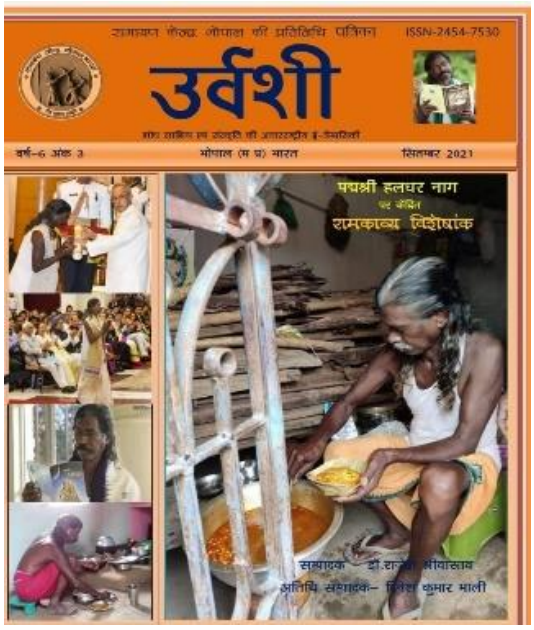

श्री भोला नाथ शुक्ला,
पूर्व अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशकमहानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड

श्री भोला नाथ शुक्ला, पूर्व अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, महानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड आपने उत्तरप्रदेश से प्रारम्भिक स्कूली शिक्षा प्राप्त कर आई॰आई॰टी,बीएचयू (तत्कालीन आईटी,बीएचयू) से सन 1982 में खनन इंजीनियरिंग में स्नातक होने के उपरान्त अपने सेवा जीवन की शुरुआत सन 1982 में एसईसीएल से प्रारम्भ की, सन 1989 में आईआईटी (तत्कालीन आईएसएम) से ओपनकास्ट माइनिंग में स्नातकोत्तर डिग्री अर्जित की। इस दोनों परीक्षाओं में आपने रजत पदक प्राप्त किया। अपने प्रोफेशनल कैरियर में उत्तरोत्तर सोपान चढ़ते हुए में 14 जून 2019 को एमसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक का पदभार संभाला।कोयला उद्योग में अपने 37 साल के व्यापक अनुभवों के आधार पर आपने राष्ट्रीय व अंतर राष्ट्रीय स्तर पर एक अमिट छाप छोड़ी है। सन 01.10.2015 से 16.08.2016 एवं 17.08.2017 से 13.06.2019 तक आपने सीएमपीडीआईएल, रांचीं में निदेशक (तकनीकी/कोयला संसाधन विकास) के पद को सुशोभित किया। इस दौरान आपने सीएमपीडीआईएल द्वारा 52000 मीटर विभागीय ड्रिलिंग करवाकर एक नया रिकॉर्ड कायम किया। यही नहीं, सीएमपीडीआईएल को एमएमआरडी अधिनियम की धारा 4(1) के अंतर्गत किसी भी खनन के प्रोस्पेक्टिंग हेतु अधिकृत बनवाकर एक नया इतिहास रचा। 17.08.2016 से 16.08.2017 में ईसीएल में निदेशक (तकनीकी) के पद पर रहते हुए विगत वर्ष की तुलना में वहाँ के भूमिगत उत्पादन में 10.89% एवं सम्प्रेषण में 11.52% वृद्धि में अहम भूमिका अदा की। इससे पूर्व एमसीएल के तालचेर कोयलांचल में हिंगुला और भरतपुर क्षेत्र के महाप्रबंधक रहते हुए पुनर्वास एवं पुनःस्थापन के मुद्दों का सफलतापूर्वक समाधान करते हुए उन क्षेत्रों के विकास ग्राफ को काफी ऊंचाई तक ले गए। अक्टूबर 2020 में महानदी कोल फील्ड्स से आप सेवानिवृत्त हुए और बनारस में अपना बसेरा बसाया है। स्थानीय साहित्यकारों को प्रेरित करने और अनुवाद के माध्यम से भारतीय साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए उल्लेखनीय योगदान हेतु 'हलधर का काव्य- संसार' आपको समर्पित की गई थी । इस संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में आपका बहुत-बहुत स्वागत । आपके कर- कमलों से हलधर की अद्यतन कृति का संयुक्त विमोचन होगा।

प्रोफेसर नंदिनी साहू
अमेजन बेस्ट सेलिंग ऑथर-2022

प्रोफेसर नंदिनी साहू इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय [इग्नू), नई दिल्ली में स्कूल ऑफ फॉरेन लैंग्वेजेस की पूर्व निदेशक एवं संप्रति अंग्रेजी की प्रोफेसर हैं।समकालीन भारतीय अंग्रेजी साहित्य की प्रमुख हस्ताक्षर हैं। उन्होंने विश्व भारती, शांतिनिकेतन के अँग्रेजी प्रोफेसर स्वर्गीय प्रोफेसर निरंजन मोहंती के मार्गदर्शन में अंग्रेजी साहित्य में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है। आप अंतरराष्ट्रीय ख्याति-लब्ध अँग्रेजी भाषा की कवयित्री होने के साथ-साथ प्रबुद्ध सर्जनशील लेखिका हैं। आपकी रचनाएँ भारत, यू.एस.ए., यू.के., अफ्रीका और पाकिस्तान में व्यापक रूप से पढ़ी जाती है। प्रो. साईन भारत और विदेशों में विभिन्न विषयों पर शोधपत्र स्तुत प्रोफेसर नंदिनी साहू किए हैं। आपको अंग्रेजी साहित्य में तीन स्वर्ण पदकों से नवाजा गया हैं। अखिल भारतीय कविता प्रतियोगिता की पुरस्कार विजेता होने के साथ-साथ शिक्षा रत्न पुरस्कार, पोयसिस पुरस्कार-2015, बौद्ध क्रिएटिव राइटर्स अवार्ड और भारत में अंग्रेजी अध्ययन में अभूतपूर्व योगदान के लिए भारत के उपराष्ट्रपति के कर-कमलों द्वारा स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया है। नई दिल्ली से प्रकाशित 'द अदर वॉयस' 'द साइलेन्स', 'सिल्वर पाएम्स औन माय लिप्स (कविता-संग्रह)', 'फॉकलोर एंड अल्टरनदेव मॉडर्निटीज (भाग-1) एवं (भाग - 2)', जीरो पॉइंट', 'सुकमा एंड अदर पोएम्स', 'सुवर्णरेखा', 'सीता (दीर्घ कविता)', 'डायनेमिक्स ऑफ चिल्ड्रेन लिटरेचर' , 'री-रीडिंग जयंत महापात्र: सलेक्टेड पोएम्स', 'ए सॉन्ग हाफ & हाफ' आदि शीर्षक वाली सत्रह अँग्रेजी पुस्तकों की आप लेखिका और संपादक हैं। डॉ. साहू ने इग्नू के लिए क्रिटिकल लिटरेचर, न्यू थ्योरी, लोकगीत और सांस्कृतिक अध्ययन, बाल साहित्य और अमेरिकी साहित्य पर अकादमिक कार्यक्रम/पाठ्यक्रम तैयार किए हैं। आपके शोध के विषयों में भारतीय साहित्य, नए साहित्य, लोककथा और संस्कृति अध्ययन, अमेरिकी साहित्य, बाल साहित्य एवं महत्वपूर्ण सिद्धांत शामिल हैं। अंग्रेजी की द्विवार्षिक समीक्षा पत्रिका 'इंटरडिसिप्लिनेरी जर्नल ऑफ लिटरेचर एंड लैंग्वेज' और 'पैनोरमा लिटेरेरिया की मुख्य संपादक/ संस्थापक-संपादक हैं।हलधर नाग के काव्यों को इग्नू के एम ए (लोक साहित्य) में शामिल करने के लिए हम सभी आप के प्रति आभारी है।

डॉ. लक्ष्मी नारायण पाणिग्रही

ओड़िया भाषा के रीडर

डॉ. लक्ष्मी नारायण पाणिग्रही:- हलधर नाग जी की जन्मभूमि घेस कॉलेज से सन 2019 में सेवानिवृत्त ओड़िया भाषा के रीडर डॉ. लक्ष्मी नारायण पाणिग्रही ओड़िया और संबलपुरी भाषा के सशक्त हस्ताक्षर हैं। विगत चार दशकों से आपके आलेख ओड़िशा के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहे हैं। ऑल इंडिया रेडियो संबलपुर, दूरदर्शन केंद्र, भुवनेश्वर में शीतल षष्ठी यात्रा का आंखों-देखा हाल प्रस्तुत करने वाले प्रमुख कॉमेंटेटर हैं। सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधियों के विभिन्न पहलुओं पर विचार रखने वाले वरिष्ठ उद्घोषक के रूप में आपकी पहचान है। कौशलांचल टीवी और सोशल मीडिया पर आपकी ओड़िया और संबलपुरी कविताएं बहुत प्रसिद्ध रही हैं। साहित्यिक संस्थानों जैसे अभिमन्यु साहित्यिक संसद,घेस; संबलपुरी लेखक परिषद, संबलपुर और प्रवासी कुटुम, बरगढ़ ने आपको समय-समय पर सम्मानित किया गया है।

डॉ. द्वारिका प्रसाद नायक

ओड़िया भाषा के प्रमुख नाटककार

डॉ. द्वारिका प्रसाद नायक डॉ. द्वारिका प्रसाद नायक ओड़िया भाषा के प्रमुख नाटककार हैं। आपने सन् 1967 से नाटक की दुनिया में कदम रखा था और सन 1973 से निर्देशक के रूप में कार्य कर रहे हैं। आपके द्वारा निर्देशित नाटक नियमित रूप से आकाशवाणी और टीवी के अनेक चैनलों पर प्रकाशित होते रहे हैं। बलांगीर पुस्तक मेला सम्मान, संबलपुर पुस्तक मेला सम्मान, हेमचंद्राचार्य सम्मान, वैशाखी सम्मान, मनोहर साहित्य सम्मान, अभिमन्यु साहित्य सम्मान, चित्रगुप्त साहित्य सम्मान, संबलपुरी भाषा सम्मान, एवं बेस्ट म्यूजिक डायरेक्टर अवॉर्ड इत्यादि से आप नवाजे गए है। हलधार नाग ग्रंथावली का संपादन कार्य आपने किया है। आपके मार्गदर्शन में अनेक शोधार्थियों ने पीएचडी पूरी की है। विशेष उपलब्धियों में विगत 7 साल से चिचिंडा धनु यात्रा में कंस महाराज की भूमिका अदा कर रहे हैं, यूजीसी की बीस से ज्यादा संगोष्ठी में अपनी उपस्थिति दर्ज की है। केंद्रीय साहित्य अकादमी के सलाहकार मंडल और ईस्ट जोन कल्चरल काउंसिल के सदस्य भी हैं। आपने शांति के लिए आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में संबलपुर यूनिवर्सिटी का प्रतिनिधित्व किया है।

डॉ० राजेश श्रीवास्तव

(डी. लिट्) मुख्य कार्यपालन अधिकारी

डॉ० राजेश श्रीवास्तव (डी. लिट्) मुख्य कार्यपालन अधिकारी, म प्र तीर्थ एवं मेला प्राधिकरण, अध्यात्म विभाग मंत्रालय म प्र शासन, भोपाल। वैश्विक रामायण के अध्येता । * उपायुक्त - रामायण केन्द्र भोपाल* राष्ट्रीय समन्वयक ग्लोबल इन्साइक्लोपीडिया ऑफ रामायण (अयोध्या शोध संस्थान संस्कृति विभाग उ प्र)* सम्पादक उर्वशी (रामायण केन्द्र की प्रतिनिधि पत्रिका)* मूलतः प्राध्यापक हिंदी उच्चशिक्षा विभाग म प्र बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल में शोध निर्देशक उच्चशिक्षा विभाग म प्र की स्नातक कक्षाओं में अनिवार्य पुस्तक आधार पाठयक्रम का सम्पादन * शिक्षा- एम. ए. (हिन्दी, अंग्रेजी, दर्शनशास्त्र) पी-एच. डी. (सागर विश्वविद्यालय) डी लिट (बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल)* विश्व हिन्दी सम्मेलन मॉरीशस 2018 में विदेश मंत्रालय, भारत के प्रतिनिधि* विश्व रामायण सम्मेलन, जबलपुर 2016 तथा 2020 में फैकल्टी* ब्रिटेन, हॉलैण्ड, बेल्जियम, फ्रांस, स्विटजरलैण्ड, जर्मनी, चैक, स्लोवाकिया, हंगरी, ऑस्ट्रिया, इटली. मॉरीशस, चीन, रशिया, श्रीलंका, इंडोनेशिया, नेपाल आदि 24 से अधिक देशों की यात्रा* विश्व हिन्दी साहित्य परिषद द्वारा 2019 में मास्को में रामायण भूषण सम्मानवागीश्वरी सम्मान, जनार्दन सम्मान, सारिका कहानी सम्मान इत्यादि 50 से अधिक सम्मान* 300 से भी अधिक रामायणों पर आधारित ग्रंथ 'रामअयन' प्रकाशित रक्षायन, कुश रामायण, डायरी में रामकहानी, किन्नर प्रदक्षिका (शीघ्र प्रकाश्य)तीन कहानी संग्रह अहं ब्रह्मास्मि, इच्छाधारी लड़की, तथा रुकोगी नहीं उर्वशी आलोचना पर सात पुस्तकें भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा दृश्य श्रव्य माध्यम लेखन लोक साहित्य हिन्दी भाषा का प्राचीन इतिहास हिन्दी भाषा का अर्वाचीन इतिहास उर्वशी और पुरुरवा की प्रेमाख्यान परम्परा

डॉ. आनंद कुमार सिंह

पूर्व प्रोफेसर (हिन्दी), इंस्टीट्यूट फॉर एक्सिलेन्स इन हायर एजुकेशन, भोपाल

डॉ. आनंद कुमार सिंह पूर्व प्रोफेसर (हिन्दी), इंस्टीट्यूट फॉर एक्सिलेन्स इन हायर एजुकेशन, भोपाल। शिक्षा:- MA (हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय) 1989; नेट और जेआरएफ, 1990; पीएच.डी. (इलाहाबाद विश्वविद्यालय) 1998 । चयन: एमपीपीएससी इंदौर द्वारा चयनित, विभिन्न शासन में सहायक, एसोसिएट और प्रोफेसर के रूप 1994 से 2020 तक कॉलेज, संस्थान, विश्वविद्यालय में कार्य किया और 15.11.2020 को वीआरएस लिया। 2014 में आईसीसीआर, नई दिल्ली द्वारा चयनित विदेशी विश्वविद्यालयों (2014) में विदेशी विश्वविद्यालयों में तथा 2021 में विजिटिंग हिन्दी प्रोफेसर डॉ अंबेडकर यूनिवर्सिटी दिल्ली के लिए चयनित।संप्रति:- अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल की सामान्य परिषद के सदस्य (महामहिम राज्यपाल और मध्य प्रदेश के कुलाधिपति को चार साल (यानी 2021 से 2025 तक) के कार्यकाल के लिए)। सदस्य बीओएस महाराजा सयाजी राव गायकवाड़ विश्वविद्यालय, बड़ौदा, (गुजरात)। सदस्य, बीओएस, हरदेव जोशी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय जयपुर। अंतर्राष्ट्रीय आमंत्रण: विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस द्वारा मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित। सांस्कृतिक पहलमप्र सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित (2009-2010) मध्य प्रदेश के जंगलों में भगवान राम के पैरों के निशान का पता लगाने के लिए चित्रकूट से अमरकंटक तक "राम वन गमन पथ शोध" के चुने हुए सदस्यों के तौर पर यात्रा की। पुरस्कार सम्मान राष्ट्रीय पुरस्कार:- आचार्य रामचंद्र शुक्ल अखिल भारतीय पुरस्कार 2014, एमपी साहित्य अकादमी, भोपाल,- स्पंदन अलोचना सम्मान, स्पंदन संस्था भोपाल द्वाराअन्य पुरस्काररामचंद्र शुक्ल पुरस्कार 2014, यूपी हिंदी संस्थान, लखनऊ, यूपी, वागेश्वरी सम्मान 2014, MP हिंदी साहित्य सम्मेलन, भोपाल, नेहरू स्मृति पुरस्कार, 1989, दलित छात्र मोर्चा, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,विवेक भूषण पुरस्कार, 2005, आध्यात्मिक राज गुरुकुलम, गोवा, विद्वत सम्मान, 2008, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, भोपाल, उत्कृष्टता पुरस्कार, 2012, उच्च शिक्षा विभाग, एमपी, नागरिक सम्मान, 2015, नागरिक कल्याण समिति, भोपाल, मप्र, (मप्र के माननीय राज्यपाल द्वारा प्रदान)अन्य पुरस्कार: (अंतर्राष्ट्रीय)-साहित्य सिंधु सम्मान, 2017, विश्व हिंदी साहित्य परिषद, नई दिल्ली- आलोचना रत्नाकर सम्मान, 2018, विश्व हिंदी साहित्य परिषद, नई दिल्ली, पुस्तक प्रकाशन: सौंदर्य जल में नर्मदा (नर्मदा नदी पर कविताएं) 2015, अथर्व मैं वहीं वन हूँ (महाकविता) 2021, सन्नाटे का छंद (अज्ञेय पर आलोचना) 2013, पेंटर श्री उदयराज गठनीस और हंस मेहता के साथ तीन सहयोगी कार्य (हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत और गुजराती) में गणपति ऑकल्ट, 2005, (कविता और चित्रकला), शक्ति ऑकल्ट, 2006, (शंकराचार्य के सौंदर्यलहरी का अनुवाद),शिव ऑकल्ट, 2007, (पुष्पदंत की शिव महिमा का अनुवाद) संपादित: अलोचना का देशज विवेक (डॉ विजय बहादुर सिंह)विमर्श का वैभव (डॉ पीएन सिंह), लोक: स्मृति और संस्कृति; महात्मा गांधी: जीवन और दर्शन; कर्मवीर (सत्यदेव सिंह अभिनंदन ग्रंथ); उत्सव पुरुष (डॉ आंजनेय अभिनंदन ग्रंथ); हिंदी कथा साहित्य (पाठ्य पुस्तक); प्राचीन और मध्यकालिन काव्य (पाठ्य पुस्तक)

डॉ० प्रभा पन्त

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, महाविद्यालय, हल्द्वानी

डॉ० प्रभा पन्त प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, महाविद्यालय, हल्द्वानी। अध्ययन अध्यापन विगत 25 वर्षों से राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालयों में। 14 शोध (पीएच.डी.) एवं 75 लघु शोध-निर्देशन। साहित्य, लोक साहित्य-लोक संस्कृति, समाज, बालसाहित्य, बाल मनोविज्ञान तथा नारी विमर्श परक शोधपत्रों-आलेखों, कविताओं, कहानियों का राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय पत्र-पत्रिकाओं तथा ई-मेग्जीनस में सतत प्रकाशन। राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर अनेक सम्मान पुरस्कार, काव्यपाठ, व्याख्यान, बीज वक्तव्यादि, ऐतिहासिक मंच लालकिला से काव्यपाठ । . साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मंचों का संयोजन एवं संचालन तथा अध्यक्षता। रंगमंच संयोजन संचालन एवं अभिनय, आकाशवाणी-दूरदर्शन में अभिनय, संवाद, कहानीपाठ, काव्यपाठ (ए ग्रेड आर्टिस्ट) उद्घोषक चयन पैनल की सदस्य। उत्तराखण्ड भाषा संस्थान में प्रबंध कार्यकारिणी समिति की सदस्य। प्रकाशित पुस्तकें: कुमाउँनी लोककथाएँ, हिन्दी अनुवाद सहित (तीन आवृत्तियों, अंग्रेजी, संस्कृत, नेपाली तथा राजस्थानी भाषाओं में अनुवाद) कुमाऊँवि०वि० एम०ए० हिंदी चतुर्थ सत्रार्द्ध के पाठ्यक्रम में सम्मिलत । तेरा तुझको अर्पण (कविता संग्रह), फाँस (कहानी संग्रह), मैं.. (कविता संग्रह), मन के खेल (बालकविता संग्रह), उत्तराखण्ड की लोककथाएँ (नेपाली भाषा में अनुवाद),परी हंसावली (अंग्रेज़ी में अनुवाद),हम और हमारा कुमाऊँ, पुखनिकि सुणाई काथ (हिन्दी अनुवाद सहित), बाल कविताएँ (दस राष्ट्रीय साझा संकलनों में), कर्मयोगी सरला बहन, बचपन की दो (बालकविता संग्रह), मेरी प्रतिनिधि कहानियाँ, उत्तराखण्डी लोककथाएँ, माँ सुनाओ कहानी (बालकविता संग्रह) और कुमाऊंनी साहित्य सुगन्धिका।

डॉ संध्या सिंह (सिंगापुर)

नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ सिंगापुर में हिंदी और तमिल भाषा विभागाध्यक्ष और वरिष्ठ हिंदी प्रवक्ता

डॉ संध्या सिंह (सिंगापुर): डॉ संध्या सिंह का हिंदी शिक्षण में सिंगापुर में दो दशकों से भी अधिक का अनुभव है और वर्तमान में नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ सिंगापुर में हिंदी और तमिल भाषा विभागाध्यक्ष और वरिष्ठ हिंदी प्रवक्ता हैं। आपने हिंदी साहित्य में एम.ए. और बी.एड. की उपाधि के साथ ही पी.एच.डी. की है। आप सिंगापुर के 'नान्यांग तेक्नोलौजिकल यूनिवर्सिटी सिंगापुर' में हिंदी भाषा का पाठ्यक्रम बनाने, हिंदी भाषा-शिक्षण शुरू करवाने के साथ ही सिंगापुर के एन.पी.एस. इंटरनेशनल स्कूल में आधुनिक भाषाओं की विभागाध्यक्षा के रूप में पाठ्यक्रम बनाने का कार्य कर चुकी हैं। सिंगापुर के गृह मंत्रालय, स्वास्थ्य मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय आदि के लिए हिंदी से सम्बंधित कई कार्य इनके द्वारा किये या करवाए जाते हैं साथ ही सिंगापुर के 'पीपुल्स असोशियेशन' में भाषा सम्बन्धी कार्यों में इनका सहयोग रहता है। सिंगापुर की पहली हिंदी पत्रिका 'सिंगापुर संगम' का सम्पादन करने के साथ ही 'संगम सिंगापुर हिंदी संस्था की संस्थापक/अध्यक्ष हैं जो सिंगापुर में भिन्न आयोजनों और प्रतियोगिताओं द्वारा हिंदी के प्रसार में कार्यरत संस्था है। सिंगापुर के स्थानीय विद्यालयों में हिंदी शिक्षण से जुड़ी प्रमुख संस्था 'हिंदी सोसाइटी सिंगापुर' की उपसचिव हैं इस संस्था में ४५०० से भी अधिक छात्र हिंदी भाषा सीख रहे हैं।डॉ संध्या को सन २०१८ में ११वें विश्व हिंदी सम्मलेन व २०२० में फीजी के हिंदी सम्मेलन में भारत सरकार द्वारा विशेष निमंत्रण मिला। २०१९ में भोपाल में हुए 'विश्व रंग' साहित्यिक कार्यक्रम व २०२० में हंसराज कॉलेज द्वारा विश्व हिंदी दिवस सम्मेलन में भी आमंत्रित किया गया। सिंगापुर, भारत, यूरोप, फीजी आदि कई जगहों पर शोध पत्र प्रस्तुत कर चुकी डॉ संध्या द्वारा विदेशियों के लिए भाषा शिक्षण से सम्बंधित रचित दोनों पुस्तकों को सिंगापुर के दोनों विश्वविद्यालयों में मुख्य पुस्तक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। गद्य लेखन में विशेष रुचि रखने वाली डॉ संध्या को कई संस्थाओं द्वारा हिंदी गौरव सम्मान, हिंदी सेवी सम्मान, प्रवासी साहित्य सम्मान जैसे कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

हरिहर झा (आस्ट्रेलिया)

अनेक साहित्यिक वेब-पत्रिकाओं में रचनायें प्रकाशित

हरिहर झा, आस्ट्रेलिया: भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर में वैज्ञानिक-अधिकारी के पद पर कार्य करने के पश्चात हरिहर झा 1990 में मेलबोर्न आये। मौसम विभाग में वरिष्ठ सूचना अधिकारी के रूप में कार्य किया। 'भीग गया मन', 'Agony Churns My Heart' ,'फुसफुसाते वृक्ष कान में', 'दुल्हन सी सजीली' – आदि इनके कविता-संग्रह निकल चुके हैं। 'Boundaries of the Heart' (Galaxy Publication), 'Hidden Treasure", 'देशान्तर'(हिन्दी अकादमी,दिल्ली), 'गुलदस्ता'(भारतीय विद्या भवन),बूमरैंग(किताबघर प्रकाशन), नवगीत-2013, VerbalArts(GJPP Author Press) आदि अनेक प्रतिष्ठित संकलनों में इनकी रचनाएँ संकलित हैं। प्रलेक प्रकाशन समूह द्वारा जारी '21वी सदी के 131 श्रेष्ठ व्यंग्यकार' की सूची में चयन। 'इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ़ पोयट्स' समेत दो अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से सम्मानित हो चुके हैं। हिन्दी व अंग्रेजी कविता-लेखन में योगदान के लिये भारतीय प्रोढ़ संघ, मेलबोर्न (NRISA) ने इन्हें 'Community Service Award (2013)' प्रदान किया। इसी वर्ष परिकल्पना हिन्दी भूषण सम्मान भी मिला। 2015 में अनहद कृति द्वारा काव्य-प्रतिष्ठा-सम्मान मिला। ILASA द्वारा लाइफ-अचीवमेंट-सम्मान(20121)।'इंटरनेशनल लाइब्रेरी ऑफ़ पोयट्री' ने इनकी दो कविताओं को 'Sound of Poetry' (कविता-एलबम) में शामिल किया। इनकी खुद की कविताओं पर दो संगीतबद्ध एलबम भी निकल चुके हैं। हिन्दी साहित्य भारती (आस्ट्रेलिया) के महामंत्री(विक्टोरिया) । 'राम काव्य पीयूष' के संपादक मंडल में शामिल तथा 'हिन्दी-पुष्प' और 'हिन्द-युग्म' को रचनात्मक सहयोग दिया। kritya (English), साहित्य-कुंज, लेखनी boloji(English), PoemHunter(English)), अनुभूति, कृत्या, हिन्द-युग्म, सृजनगाथा, आखर कलश, काव्यालय, परिकल्पना, स्वर्ग-विभा, रचनाकार, सृजनगाथा, हायकुदर्पण, हिन्दी चेतना, ई-कल्पना पत्रिका, गर्भनाल , हिन्दी-गौरव, भारत-दर्शन आदि अनेक साहित्यिक वेब-पत्रिकाओं में रचनायें प्रकाशित। रेडियो व टीवी पर कविता पाठ।

श्री विपिन गुप्ता

नेशनल एक्सप्रेस के संस्थापक, दिल्ली

श्री विपिन गुप्ता दिल्ली से प्रकाशित होने वाले हिन्दी अखबार नेशनल एक्सप्रेस के संस्थापक श्री विपिन गुप्ता का जन्म 1 जनवरी 1957 को मूसानगर कानपुर में माता स्व कलावती गुप्ता- पिता स्व महेश्वरी दयाल गुप्त प्रख्यात समाजवादी नेता (लोकनायक जयप्रकाश नारायण व डा0 राम मनोहर लोहिया के निकट सहयोगी रहे) के घर हुआ। आपकी पत्नी श्री मती रजनी गुप्ता "गुरू गोविंद दर्शन" सर्व धर्म की राष्ट्रीय मासिक पत्रिका की संपादिका है । आपने सन 1978 में कानपुर विश्वविद्यालय से स्नातक तक की शिक्षा अर्जित की है। आपने 1977 में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की आंदोलन संपूर्ण क्रांति कार्यालय के कार्यालय सचिव के रूप में दिल्ली से राजनीतिक यात्रा की शुरुआत एवं जुलाई 1978 से 1981 पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के किसान संगठन अखिल भारतीय किसान सम्मेलन के राष्ट्रीय कार्यालय सचिव तथा 1981 से नेशनल एक्सप्रेस प्रकाशन समूह की स्थापना। वर्तमान में 3 राज्यों छत्तीसगढ़ उत्तर प्रदेश दिल्ली से प्रशासन 1979 अंतरराष्ट्रीय विश्व धर्म सम्मेलन कोलंबो श्री लंका में भारत का प्रतिनिधित्व साल 2010 में नेपाल की सरकार के विशेष अतिथि रूप में 10 दिवसीय नेपाल यात्रा एवं 2016 में मॉरीशस कि राष्ट्रपति के आथित्य में 10 दिवसीय मारीशस यात्रा ,एव 2018 70 दिन की अमेरिका यात्रा के दौरान नासा सहित कई प्रमुख शहरों और संस्थानों का भ्रमण 1979 में पूर्व प्रधान मंत्री स्व चौधरी चरण सिंह द्वारा "राष्ट्रभक्त सम्मान" तथा 2010 में "शांतिदूत सम्मान" मुंबई में प्राप्त हुआ। वर्तमान में "भारतीय मतदाता संगठन" के राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद पर कार्यरत एवं "वैश्य मीडिया फेडरेशन ऑफ इंडिया" के राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद पर है। "वैश्य वर्ल्ड फाउंडेशन" के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष तथा "भारत सेवक समाज " दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष है।

डॉ बुल्टी दास
अगरतला त्रिपुरा

- संप्रति -
- सहायक आचार्य, साहित्य विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश
- कई संगोष्ठियों, सम्मेलनों में प्रतिभागिता की है ।
- 2018 में मॉरिशस में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में पूर्वोत्तर राज्यों से संस्कृत विशेषज्ञ के रूप में प्रतिभागिता की है ।
- बंग्ला-हिंदी-संस्कृत के बीच में कई अनुवाद कार्य किया है ।

श्री रामप्रकाश कुशवाहा
प्रसिद्ध हिंदी आलोचक, वाराणसी

श्री रामप्रकाश कुशवाहा जन्म चन्दवक, जोनपुर (उ.प्र.) में 22 फरवरी सन् 1959 को। शिक्षा: हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम.ए. हिन्दी एवं 'प्रगतिवादी काव्य और कवि केदारनाथ अग्रवाल' विषय पर शोध उपाधि, एम.ए. अंग्रेजी साहित्य, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी से। रचनात्मक उपलब्धियाँ :मूलत: सभ्यता-विमर्श में रुचि। पहला चर्चित आलोचनात्मक हस्तक्षेप 1991 में 'हंस में चले भेड़िए' नई कहानी विवाद में 'कहानी के लुप्त प्रतिमान', 'नई कहानीवाद और आग्रही आलोचना ' द्वारा। बीती सदी के नवें दशक के आरम्भ मे ही कविता और आलोचना दोनों ही विधाओं में अपनी मौलिकता के लिए पहचान बनायी। लगभग 50 से अधिक विचार एवं आलोचना से सम्बंधित आलेख प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित; लगभग इतनी ही कविताएं भी धर्मयुग, हंस, नया ज्ञानोदय, प्रगतिशील वसुधा, समकालीन जनमत, समकालीन सृजन, समकालीन सोच, वर्तमान साहित्य, इन्द्रप्रस्थ भारती जैसी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में। सम्मान:- 'पूर्वग्रह' के अंक 94 में प्रकाशित 'रचना का चौथा आयाम और समीक्षा का : पाठकीय दर्शन' तथा 'सृजन संवाद के अंक 7 एवं 8 में प्रकाशित लेख संस्कृतियों का वैश्विक संघर्ष और सभ्यता का पुनर्पाठ' के लिए। वर्ष 1989 में ही 'विवेचिता' पुस्तक भारत सरकार द्वारा अपने दूतावासों में वितरण के लिएखरीदी गई। हँसता हुआ बाजार' और 'सृष्टि-संवाद' (कविता-संग्रह); 'रचना का चौथा आयाम' (आलोचना), 'सभ्यता का पुनःपाठ' और 'मैने अपना ईश्वर बदल दिया है' (सभ्यता विमर्श) आदि अन्य पुस्तकें हैं जो शीघ्र ही उपलब्ध हो रही हैं। डॉ. पी.एन. सिंह द्वारा प्रकाशित वैचारिक पत्रिका 'समकालीन सोच' के लम्बे समय तक सम्पादन सहयोगी भी रहे हैं। सम्प्रति : राजकीय उच्चतर शिक्षासेवा, उत्तर प्रदेश में अधिकारी के रूप में लम्बी सेवा के पश्चात शहीद मंगल पाण्डेय राजकीय महिला महाविद्यालय, बलिया के प्राचार्य पद से फरवरी 2019 में सेवानिवृत्त । सम्पर्क: बी-1, श्री सांई अपार्टमेण्ट, टंड़िया (करौंदी) सुन्दरपुर, वाराणसी- 221005

डॉ. आरती पाठक

सहायक प्राध्यापिका (साहित्य एवं भाषाविज्ञान),
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छत्तीसगढ़)

डॉ. आरती पाठक, शिक्षा:- एम. ए. एम. फ़िल., पीएचडी संप्रति:- सहायक प्राध्यापिका (साहित्य एवं भाषाविज्ञान), पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छत्तीसगढ़)। शोध-कार्य:- प्रसाद के नाटकों का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रकाशित पुस्तक : समाजभाषाविज्ञान और प्रसाद के नाटकप्रमुख शोध-पत्र : प्रसाद के नाटकों में संघर्ष एवं विश्वबंधुत्व की भावना, प्रसाद के नाटकों में संघर्ष एवं विश्वबंधुत्व की भावना, राष्ट्रीय भावनात्मक एकता में नागरी लिपि का योगदान, राष्ट्रीय एकता और नागरी लिपि, नाटककार जयशंकर प्रसाद, अज्ञेय की काव्यभाषा, भोजपुरी लोकगीतों में कजरी' की प्रासंगिकता; सहभागिता :- अनेक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों, वेबिनारों एवं कार्यशालाओं में सहभागिता में सहभागिता

श्रीमती करुणालक्ष्मी के.एस.

सहायक प्राध्यापिका, श्री डी. देवराज अरसु सरकारी महाविद्यालय, हुणसूर, कर्नाटक

श्रीमती करुणालक्ष्मी के.एस. संप्रति:- कर्नाटक में मैसूर के पास हुणसूर के श्री डी. देवराज अरसु सरकारी महाविद्यालय की सहायक प्राध्यापिका शिक्षा :- बी० ए०(मैसूर विश्वविद्यालय से वैकल्पिक साहित्य और भाषा के लिए दो स्वर्ण पदक के साथ), बी.एड., 2002 में दूसरी रैंक के साथ हिंदी में एम.ए. । अब पीएच.डी. डॉ प्रतिभा एम मुदलियार, एल (मैसूर विश्वविद्यालय) के मार्गदर्शन में।रुचि का क्षेत्र - रचनात्मक लेखन, अनुवादप्रकाशन : श्री कुप्पेनागराजा की आत्म-कथा 'अलेमारिया अंतरंगा' हिंदी में अनुवाद 'घुमक्कड़ का अंतरंग' शीर्षक से, अमृता प्रीतम की कहानी का कन्नड अनुवाद 'भाग्यवती' कन्नड़ की लोकप्रिय मासिक पत्रिका 'मयूरा' में प्रकाशित , कन्नड़ की जानी-मानी लेखिका मलाथी पट्टनशेट्टी के अभिनंदनग्रंथ में 8 अनूदित लेख शामिल, कन्नड़ की जानी-मानी लेखिका डॉ. वीणा शांतेश्वर की 'निर्दिगंधा' में 4 अनूदित लेख शामिल, मैसूर विश्वविद्यालय में कुवेम्पु की अनूदित कविताओं का संकलन, हिंदी से कन्नड़ में अनूदित कहानी 'प्रतीक्षा' में कर्नाटक अनुवाद साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित संग्रह 'होसतलेमरीना हिंदी कथेगलु' , श्री अप्पास्वामी की बच्चों के लिए 'नम्मा मेच्चीना प्रधान नरेंद्र मोदी' कन्नड पुस्तक का हिन्दी अनुवाद, हिंदी उपन्यास 'विशादेश्वरी' का कन्नड़ में अनुवाद। सेमिनार और पेपर प्रस्तुतियांराज्य स्तरीय संगोष्ठी में 'गिरीश कर्नाड के नाटकों में मिथकीय चेतना' विषय पर शोध पत्र,राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'समकलीन कविता में राष्ट्रीयता' विषय शोध पत्र, श्री डी देवराजा यू गवर्नमेंट फर्स्ट ग्रेड कॉलेज हुनसूरी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं सेंट पीटर कॉलेज, कोलेनचेरी, केरल द्वारा आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी एवं 'प्रवासी भारतीय साहित्यकार तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में अभिव्यक्त मानवीय संवेदना' विषय पर मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर द्वारा आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में शोध पत्र प्रस्तुत किए।

*

डॉ. सुजीत कुमार प्रूसेठ

फैकल्टी, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन

डॉ. सुजीत कुमार प्रूसेठ ने जेएनयू एमए, एमफिल एवं पीएचडी की उपाधि अर्जित की है। यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड से सर्टिफिकेट कोर्स भी किया है। इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में फैकल्टी के रूप में कार्य कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त पेट्रोलियम एवं नेचुरल गैस मंत्रालय और स्किल डेवलपमेंट एंटरप्रेन्योरशिप 2019 में भी उच्च पदों पर अपनी सेवाएं देते रहे हैं। आपने कैरियर की शुरुआत एनएलयू बेंगलुरु में संकाय सदस्य के रूप में की थी। संप्रति आपको डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी के इनोवेशन स्टार्टअप एवं इनक्यूबेशन एक्सपर्ट कमिटी का सदस्य नियुक्त किया है। आपकी 8 किताबें प्रकाशित हुए हैं और 14 शोधार्थियों ने आपके मार्गदर्शन में एम.फिल. किया है। आईआईएम, इंदौर के विजिटिंग प्रोफेसर भी हैं और यूनाइटेड नेशन की ओर से इजराइल में उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति भी मिली है।

प्रोफेसर शांतनु सर

गवर्नमेंट ऑटोनॉमस कॉलेज, अंगुल के रिटायर्ड प्रिंसिपल

प्रोफेसर शांतनु सर : आप गवर्नमेंट ऑटोनॉमस कॉलेज, अंगुल के रिटायर्ड प्रिंसिपल है। मधुसूदन ट्रस्ट फंड के गोल्ड मेडल विनर है। कॉलेज जमाने में लिटरेरी चैंपियन और श्रेष्ठ डिबेटर रह चुके हैं। कविता, आलोचना लेखन तथा ओड़िया पत्रिकाओं में बहुप्रसारित तथा अखबारों में नियमित स्तंभ लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं। अंगुल रथ यात्रा के दौरान आंखों देखी कमेंट्री करनेवाले उद्घोषक, संवाद साहित्य घर के अध्यक्ष, जिला साहित्य संसद के उपाध्यक्ष, अनेक साहित्यिक संस्थानों से पुरस्कृत।

श्री सुरेंद्र नाथ

डिफेंस अधिकारी के तौर पर सरकारी अवकाश स्वीकृति

श्री सुरेंद्र नाथ बचपन के दिनों से आपने अपने मन में लेखन का सपना सँजोए रखा था। डिफेंस में अधिकारी के तौर पर सरकारी अवकाश ग्रहण करने के बाद यह सपना साकार हुआ। सेवानिवृत्ति के बाद आपने कीट अंतरराष्ट्रीय स्कूल में एडमिनिस्ट्रेशन ऑफिसर के रूप में पदभार ग्रहण किया। मगर लेखन के प्रति प्रतिबद्धता के कारण शीघ्र ही वह नौकरी छोड़कर साहित्य गतिविधियों में पूर्णकालिक योगदान देने लगे। किट में आयोजित होने वाले साहित्यिक आयोजनों के माध्यम से आप रस्किन बॉन्ड, मनोज दास, चंद्रभान चौधरी जैसे ख्यातिलब्ध लेखकों के संपर्क में आए। आपकी दो अंग्रेजी किताब 'कर्ण'स अल्टर इगो' व 'कवच ऑफ सूर्य' बहुचर्चित रही। एक दिन सोशल मीडिया पर हलधार नाग को धोती पहने नंगे पांव सीधी–सादी वेशभूषा में देखकर उसी समय उनके समृद्ध संबलपुरी साहित्य को अंग्रेजी में अनुवाद करने का निर्णय लिया। इस संदर्भ में प्रोजेक्ट काव्यांजलि के तहत हलधर की कविताओं के अंग्रेजी में अनूदित 5 भाग प्रकाशित हो चुके है।

डॉ. सुधीर सक्सेना

साहित्यकारिता-व- ट्राइबल आर्ट्स एण्ड कल्चर में डिप्लोमा धारक

डॉ. सुधीर सक्सेना:- साहित्यकारिता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर कविता, पत्रकारिता, अनुवाद, संपादन और इतिहास लेखन में एक साथ सक्रिय जन्म लखनऊ में, किंतु किसी एक शहर अथवा आजीविका से बंधकर नहीं रह सके। विज्ञान एवं पत्रकारिता में डिग्रियां, लोक-प्रशासन एवं हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधियां तथा रूसी भाषा एवं ट्राइबल आर्ट्स एण्ड कल्चर में डिप्लोमा। सवाल्टर्न स्टडीज में गहरी रुचि आजादी की लड़ाई में आदिवासियों की शिरकत पर शोध कार्य पर पी.एच.डी.। प्रकाशित कृतियां-कविता संकलन: बहुत दिनों के बाद, समरकंद में बाबर, काल को भी नहीं पता, किताबें दीवार नहीं होतीं, रात जब चंद्रमा बजाता है बांसुरी, किरच किरच यकीन, ईश्वर हां, नहीं तो.... कुछ भी नहीं अंतिम लंबी कविता : बीसवीं सदी, इक्कीसवीं सदी, धूसर में बिलासपुर अनुवाद कभी न छीने काल (कायसन कुलियेव), स्मृति गाथा (येगोर इसायेव), एक अव्वल चमत्कार (सदी की पोलिश कविताएं)। सह-अनुवाद: अर्धरात्रि में पक्षी की आवाज (ओसिप मंदेलश्ताम) अनिल जनविजय के साथ, ब्राजील की कविताएं। गद्य कृतियां : मध्य प्रदेश में आजादी की लड़ाई और आदिवासी, भूमकाल, ऐसे आये गांधी, छत्तीसगढ़ में गांधी, बस्तर का भूचाल, गुंडा धूर: युयुत्सु महानायक, गोविंद की गति गोविंद... कविता पोस्टर: स्टीफेन स्पेण्डर की कविताएं। सम्मान : सोमदत्त सम्मान, पुश्किन अवार्ड, माधवराव सप्रे पुरस्कार, वागेश्वरी अलंकरण, जिपलेप, सृजनगाथा, केशव पांडेय, त्रिसुगंधी, लाल बलदेव सिंह, प्रमोद वर्मा सम्मान, केदार स्मृति सम्मान, शिवकुमार मिश्र सम्मान तथा शमशेर सम्मान। फेलोशिप: बालकृष्ण शर्मा नवीन फेलोशिप दैनिक आज, जागरण, महाकोशल, लोकस्वर आदि पत्रों, संवाद समिति समाचार भारती, हिन्दी पोर्टल वेबदुनिया, चैनल राज टीवी आदि से संबद्धता, सामयिक पत्रिका माया से बतौर ब्यूरो प्रमुख राजनीतिक संपादक करीब ढाई दशक तक जुड़ाव, वॉयस ऑफ अमेरिका के लिए नियमित रिपोर्टिंग, लघु पत्रिका अभिव्यक्ति (नागपुर) एवं अभी (कानपुर) तथा सांध्य दैनिक सांझ तक (भोपाल) का संपादन-प्रकाशन संस्थापक-संपादक: साप्ताहिक इंडिया न्यूज (दिल्ली)। सलाहकार संपादक: राष्ट्रीय हिन्दी मेल (भोपाल)। संप्रति : प्रधान संपादक, दुनिया इन दिनों उज्बेकिस्तान, अर्मीनिया, रूस समेत पूर्व सोवियत संघ, नेपाल, हांगकांग, चीन, जापान, मलेशिया, थाईलैंड, साउथ अफ्रीका, मिस्र, इथियोपिया, इस्रायल, तुर्की, श्रीलंका, अमेरिका आदि देशों की यात्राएं।

डॉ. विमला भंडारी

रचयिता, 'सलूंबर का इतिहास'

डॉ. विमला भंडारी जन्म तिथि: 1 फरवरी 1955 मूल निवास: राजनगर जिला राजसमंद (राज) शैक्षणिक योग्यता: बी. एस. सी. बी. जे. एम. सी. एम. ए. (हिन्दी साहित्य) विद्यावाचस्पति (मानद) विशेषज्ञता क्षेत्र: बाल कहानी, बाल उपन्यास, कविता, कहानी, नाटक, फीचर, लेख, कहानी, साहित्य एवं इतिहास शोध लेखन, संपादनपुरस्कार : साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली का बाल साहित्य पुरस्कार; राजस्थान साहित्य अकादमी का शंभूदयाल सक्सेना पुरस्कार; राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी का बाल साहित्य पुरस्कार; राष्ट्रीय बाल शिक्षा एवं बाल कल्याण परिषद, लाडनूं का श्यामादेवी कहानी पुरस्कार; बालवाटिका पत्रिका का किशोर उपन्यास पुरस्कार; बालप्रहरी मासिक पत्रिका का राष्ट्रीय पुरस्कार; श्रेष्ठ कहानी पुरस्कार साहित्य समर्था जयपुर की पत्रिका से; श्रेष्ठ कविता पुरस्कार, शब्द निष्ठा संस्थान, अजमेर से बाल साहित्य पुरस्कार सृजन सेवा संस्थान, श्रीगंगानगर से; बाल साहित्य भूषण पं. हरप्रसाद पाठक स्मृति पुरस्कार, मथुरा से: बसती चांडक माहेश्वरी महिला साहित्य पुरस्कार, श्रीमती बसंतीबाई लक्ष्मीनारायण चांडक चेरिटिबल रिसर्च फाउंडेशन, आकोला से। आपकी लिखी पुस्तक 'सलूंबर का इतिहास' बहुत चर्चित एवं लोकप्रिय हुआ। उन्हें विक्रमशिला विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार द्वारा 2011 में विद्यावाचस्पिति की मानद उपाधि से नवाजा गया।

सम्मान:- युगधारा सृजन धर्मिता सम्मान, राष्ट्रकवि पं. सोहनलाल द्विवेदी बाल साहित्य में विशेष सम्मान, हिन्दी दिवस पर राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा विशेष सम्मान, गणतंत्र दिवस पर सलूंबर नगर द्वारा विशेष सम्मान, हाडा रानी गौरव संस्थान, सलूम्बर द्वारा विशेष सम्मान, कवि शिरोमणी संत सुन्दरदास हिन्दी सेवा सम्मान, दौसा राजस्थान द्वारा सम्मान पुरस्कार,भारतीय बाल कल्याण परिषद, कानपुर उ.प्र. द्वारा सम्मान पुरस्कार, बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केन्द्र, भोपाल. म.प्र. द्वारा सम्मान पुरस्कार इत्यादि।

डॉ. एस. प्रीति लता

सहायक प्रोफेसर और प्रमुखसंकाय: हिंदी, लेडी डॉक कॉलेज, मदुरे

नाम : डॉ. एस. प्रीति लता, पद : सहायक प्रोफेसर और प्रमुखसंकाय: हिंदी, लेडी डॉक कॉलेज, मदुरै।भाषा प्रवीणता: उड़िया, तमिल, अंग्रेजी, हिंदीयोग्यता: एमए, एमए, एम.फिल।, पीएच.डी, अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्रकाशित पुस्तकें – 2पुस्तकों/पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख – 25अंतर्राष्ट्रीय / राष्ट्रीय संगोष्ठी और सम्मेलनों में प्रस्तुत पत्र - 37अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय वेबिनार में भाग लिया- 35 अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय कार्यशालाओं में भाग लिया - 6संसाधन व्यक्ति और मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित - 47 (क्षेत्रीय और राष्ट्रीय)शैक्षणिक परामर्श विश्वविद्यालय और कॉलेज – 17 पुरस्कार1. ग्लोबल मैनेजमेंट काउंसिल, अहमदाबाद द्वारा देश में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक का उत्कृष्टता पुरस्कार 'आदर्श विद्या सरस्वती राष्ट्रीय पुरस्कार'2. पर्ल फाउंडेशन, मदुरै द्वारा भारत में हिंदी साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के सम्मान में सर्वश्रेष्ठ महिला सहायक प्रोफेसर पुरस्कार।

डॉ. चितरंजन मिश्रा

पूर्व विभागाध्यक्ष, बीजेबी ऑटोनोमस कॉलेज

डॉ. चितरंजन मिश्रा डॉ. चितरंजन मिश्रा का नाम ओड़िया और अंग्रेजी साहित्य में चिर-परिचित है। आप ओड़िशा के प्रसिद्ध बीजेबी ऑटोनोमस कॉलेज के विभागाध्यक्ष पद से 2019 में सेवानिवृत्त हुए हैं। अनुवाद के क्षेत्र में भी आपका योगदान अनुकरणीय है। काम्यू के उपन्यास' 'द आउटसाइडर' और 'हैरोल्ड पिंटर' के 4 नाटकों का ओड़िया में आपके अनुवाद बहुचर्चित रहे हैं। आपकी कविताएं देश–विदेश की पत्र-पत्रिकाओं जैसे एनओसीएल, यूएसए, इंडियन लिटरेचर ,काव्य भारती, चंद्रभागा, इंडियन जर्नल ऑफ इंग्लिश स्टडीज, डिब्रूगढ़ जर्नल ऑफ इंग्लिश स्टडीज आदि में छपती रही है । ओड़िशा की अनेक साहित्यिक संस्थानों जैसे प्रजातंत्र प्रसार समिति, कटक पंचम वेद, संध्यातारा, साहित्य संसद, अभिनंदिता पुरी प्रमुख है। अतिथि संकाय के रूप में भी अनेक विश्वविद्यालयों में आपका योगदान रहा है। यहां तक कि यूनिवर्सिटी आफ जीन माउलिन, लियोन, फ्रांस में भी।

सुशांत कुमार मिश्र

ख्याति-लब्ध शिक्षाविद, लेखक, सामाजिक कार्यकर्ता, उद्घोषक एवं संगठन कर्ता

सुशांत कुमार मिश्र : सुशांत कुमार मिश्र ख्याति-लब्ध शिक्षाविद, लेखक, सामाजिक कार्यकर्ता, उद्घोषक एवं संगठन कर्ता है। संप्रति संबलपुर विश्वविद्यालय के सीनियर सदस्य और बी एम कॉलेज, बरगढ़ में अंग्रेजी के लेक्चर हैं। सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाने वाले लेखक होने के साथ-साथ थियेटर, सांस्कृतिक साहित्यिक आयोजनों, हेल्थ कैंप, ब्लड डोनेशन कैंप खेलकूद गतिविधियों और सामाजिक वानिकी से सदैव संपृक्त रहे हैं। आम आदमी की आवाज को राष्ट्रीय आवाज बनाने की हसरत रखने वाले लेखक को अनेक सम्मानों से आपको नवाजा जा चुका है।

डॉ सुमेर खजूरिया

एडवोकेट, राष्ट्रीय सचिव, अखिल भारतीय हिंदी महासभा, इंस्टीट्यूट ऑफ स्कॉलर्स, बंगलौर के आजीवन सदस्य और विश्व मानवाधिकार संरक्षण आयोग के सदस्य

डॉ सुमेर खजूरिया, एडवोकेट, राष्ट्रीय सचिव, अखिल भारतीय हिंदी महासभा, इंस्टीट्यूट ऑफ स्कॉलर्स बंगलौर के आजीवन सदस्य और विश्व मानवाधिकार संरक्षण आयोग के सदस्य । पुरस्कार: सर्वश्रेष्ठ वरिष्ठ शोधकर्ता पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ पेपर प्रस्तुति पुरस्कार, अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में सर्वश्रेष्ठ पत्र प्रकाशित पुरस्कार, भारतज्योति गुरु सम्मान पुरस्कार 2021, वरिष्ठ शोधकर्ता पुरस्कार 2020 प्रकाशन के तहत 13 प्रकाशित दो पुस्तकें, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों में लगभग 35 राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों और 300 वेबिनार में भाग लिया, राष्ट्रीय महत्व की विभिन्न पुस्तकों में 15 अध्यायों के अलावा, जम्मू के प्रमुख अंग्रेजी दैनिकों में 50 से अधिक लेख प्रकाशित ।

अर्चना उपाध्याय

एम्पनल्ड डिज़ाइनर, भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय और उत्तरप्रदेश इंस्टिट्यूट ऑफ डिज़ाइन

अर्चना उपाध्यायजन्मस्थान- प्रयागराज (उप्र)शिक्षा - स्नातक-पेंटिंग ऑनर्स (बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी)परा स्नातक- मास्टर्स इन सोशियोलॉजीमास्टर्स इन लाइब्रेरी साइंसडिप्लोमा- टेक्सटाइल डिजाइनिंग इन एंड जर्नलिज्मसम्प्रति- डायरेक्टर एवं फाउंडर - अंतरा सत्व फाउंडेशनडिज़ाइनर- वस्त्र मंत्रालय एवं उत्तरप्रदेश इंस्टीट्यूट ऑफ डिज़ाइन (लोक कलाओं एवं कारीगरों के संवर्धन व प्रोत्साहन की परियोजनाओं पर कार्य)यूट्यूब चैनल ' अंतरा द बुकशेल्फ़ ' पर हिंदी किताबों का परिचय।स्वतंत्र लेखन एवं समाज कार्यपुरुस्कार-प्राइड ऑफ वुमन अवार्डअवार्ड ऑफ ऑनर स्वच्छता अग्रदूत सम्मानतेजिस्विनी अवार्ड नारी गौरव सम्मान अभिनव नृत्यशाला सम्मानमातृ शक्ति सम्मानराष्ट्रीय संस्कृति सम्मानराष्ट्रीय किंकर सम्मानअनुभव - पीडिलाइट संस्था में वर्षों एक्सपर्ट टीचर एवं केंद्रीय विद्यालय आदि शिक्षण संस्थानों में फाइन आर्ट टीचर के रूप में अध्यापन का अनुभव।विभिन्न पत्र- पत्रिकाओं में लेखन व पुस्तकों का प्रकाशन।भाव कलश (साझा संकलन)विश्व हाइकु कोश (साझा संकलन)उपन्यास की मीमांसा (अर्चना उपाध्याय एवं डॉ विवेक शंकर)पहल एक प्रयास संस्था के साथ मिल कर स्वच्छता एवं शीरोज संस्था के साथ मिल कर एसिड पीड़ितों के लिए कार्य।अपनी संस्था अंतरा सत्व फाउंडेशन के माध्यम से जरूरतमंदों तक पुस्तकें पहुंचाना, हिंदी एवं क्षेत्रीय साहित्य के लिए काम करना, संस्कृति एवं कला के सामाजिक कार्यक्षेत्र से जुड़े रहने का सफर जारी है।

डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी), राजकीय मॉडल डिग्री कॉलेज, खुर्जा, बुलंदशहर (उत्तरप्रदेश)

डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह जन्म तिथि: 04-06-1975मूल निवास: ग्राम नगला खन्ना, नारई, पो- सिकन्दरा राऊ, हाथरस, उ.प्र. शैक्षणिक योग्यता: एम.ए. (हिंदी, भाषाविज्ञान), स्लेट, पीएच.डी.प्रयोजनमूलक हिंदी तथा अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, उर्दू में डिप्लोमा। विशेषज्ञता क्षेत्र: भारतीय भाषाएं एवं भाषाविज्ञान, व्यतिरेकी भाषाविज्ञान, ब्रजभाषा भाषाविज्ञान, राजभाषा, मोहन राकेश, आलोचना विमर्श (दलित, स्त्री, आदिवासी, तृतीय लिंग)पुरस्कार एवं सम्मान: 1. उत्तम कलाकार पुरस्कार, नाट्य मंचन, 1998, अंतर रेल हिंदी सप्ताह समारोह, दक्षिण पूर्व रेलवे मुख्यालय, कोलकाता. 2. विशिष्ट हिंदी सेवी सम्मान, 2014, उत्तर प्रदेश हिंदी प्रोत्साहन समिति, सिकन्दरा राऊ, हाथरस, 3. बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय फेलोशिप सम्मान-2015, भारतीय दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली | कार्य अनुभव: 1. सन 1999 मे 2011 तक राजभाषा विभाग, भारतीय रेल में सेवा, 2. सन 2011 से वर्तमान तक उच्च शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश में कार्यरत,संपादन:- रेलनिधि, प्रेरणा, रेलमेल, हिंदी सुरभि तथा ऋचा पत्रिकाओं का संपादन, प्रकाशित:- हिंदी साहित्य विविधा, व्यतिरेकी भाषाविज्ञान, ऋषभदेव शर्मा का विकर्म, ब्रज का भाषाविज्ञान (स्वरचित), Emerging Trends in Higher Education, Role of Higher Education in context of socio, economic and scientific standards, वंचित संवेदन का साहित्य, भाग-1 (दलित विमर्श), वंचित संवेदना का साहित्य भाग-2 (स्त्री विमर्श), वंचित संवेदना का साहित्य भाग-3 (आदिवासी विमर्श), विमर्श का तीसरा पक्ष (संपादित), उपन्यासों के आईने में थर्ड जेंडर, कथा और किन्नर (कहानी-संग्रह), पत्रिकाओं में तथा ई पत्रिकाओं में कविताएं, आलेख, लघुकथाएं, कहानियां प्रकाशित होने के साथ-साथ रिसर्च जर्नलों तथा आइ. एस. बी. एन पुस्तकों में कुल 73 शोधालेख। रेडियो प्रसारण: सन् 1996 से 1999 तक आकाशवाणी केंद्र विशाखापटनम से 15 कविताएं प्रसारित संप्रति : असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी), राजकीय मॉडल डिग्री कॉलेज, खुर्जा, बुलंदशहर (उत्तरप्रदेश)

उत्पन्न कुमार भोई

साहित्यकार, सम्बलपुर

उत्पन्न कुमार भोई आपका जन्म ओडिशा के बरगढ़ जिले के नुआपाली गाँव में 25 फरवरी 1963 को हुआ। सम्बलपुर यूनिवर्सिटी से ओडिया भाषा एवं साहित्य में एम.ए. और एम.फिल. करने के बाद भेड़ेन स्थित आंचलिक किसान महाविद्यालय में ओड़िया विभाग के व्याख्याता के रूप में काफी दिनों तक अवैतनिक सेवा प्रदान की। छात्रावस्था से ही अपने सारस्वत कर्म में लगे हुए हैं। ओड़िया एवं संबलपुरी भाषा में ग्यारह पुस्तकों के रचियता । पाँच संबलपुरी साहित्य पत्रिका, पाँच साहित्यिक पुस्तकें, एवं आठ स्मरणिकाओं के संपादक। अनेक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अनुष्ठानों के मुख्य पदों को सुशोभित करते हुए अनवरत साहित्य-सेवा जारी। ओड़िया अखबारों के प्रमुख स्तंभकार। पत्र-पत्रिकाओं में सामयिक विषयों पर लेख। आकाशवाणी से प्रकाशन।प्रमुख पुस्तकें:- संबलपुरी साहित्य चर्चा, संबलपुरी साहित्य समालोचना, संबलपुरी भाषा आंदोलन, कच्चा सुआदी (कहानी-संग्रह), जीरा खनी (कविता-संग्रह) आदि दर्जनों पुस्तकें प्रकाशित।प्रमुख सम्मान:- हलधर सम्मान (घेस), कवि और कथाकार सम्मान (बरगढ़), प्रतिभा सम्मान (बरगढ़),भाषा सेतु सम्मान,सम्बलपुर पुस्तक मेला सम्मान,हेमचन्द्र सम्मान (बरगढ़) आदि अनेक पुरस्कार।

डॉ ए भवानी

मदुरै में The American college, के हिन्दी विभाग में कार्यरत

डॉ ए भवानी: एक परिचय आप का जन्म पूणे में हुआ था, बचपन प्रयागराज में, और शादी उपरांत चेन्नई महानगर में लगभग 4 दशकों से रही, आज मदुरै में विगत अगस्त से The American college, के हिन्दी विभाग में कार्यरत हूँ। आप तमिल,हिन्दी, अंग्रेजी तीनों भाषाओं में सक्षम हैं। आप की प्रारंभिक शिक्षा, प्रयागराज में हुई, उच्च शिक्षा दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के उच्च शिक्षा और शोध संस्थान में MA, Mphil, PhD, PG diploma in translation की पढ़ाई प्राप्त की। सन्1983 से 1988 तक आकाशवाणी मद्रास केन्द्र में AIVP की हिन्दी उदाघोषिका रही, विभिन्न कालेजों में प्रवक्ता के रूप में 4 वर्ष का अनुभव, 1989 से 1991 तक हिन्दी अधिकारी के रूप में केरल स्थित कोट्टयम के हिन्दुस्तान न्याज प्रिन्ट् लिमिटेड में कार्यरत रहीं, 1997 से 2008 तक प्रवक्ता एवं रीडर की हैसियत से उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, द,भ,हि,सभा चेन्नई में काम करने के उपरांत, तिरूनेलवेली स्थित मनोणणमणियम सुन्दरनार विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में आचार्य और अध्यक्षा के रूप में कार्यरत रहीं और 2014 से सेवानिवृत्त हो जाने के बाद आज The American College ,Madurai मे पुनः हिन्दी साहित्य जगत से जुड़ गयी हूँ। आप के अधीन 50 एम फिल और 10 पी-एच-डी के शोधार्थी सफलता के साथ डिग्री हासिल कर के विभिन्न कालेजों में कार्यरत है। लगभग 8 किताब प्रकाशित हुआ है, जिसमे एक अनुदित कहानी संग्रह है, एक अनुवादित कहानी संकलन है। इसके अलावा भारतीय कोश हेतु वृहद लेख यथा तमिलनाडु लोक साहित्य, तमिल लोक बाल साहित्य, तमिल लोरी साहित्य, एवं तमिलनाडू का आधुनिक साहित्य का इतिहास। प्रकाशाधीन तमिलनाडू की लोक कहानियाँ। इसके अलावा 300 से अधिक शोध लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। विभिन्न राज्यों से सम्मानित एवं पुरस्कृत, यथा: केरल, कोयम्बतूर, चेन्नई, मध्य प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, आदि ,लखनऊ के हिन्दी संस्थान द्वारा 'सौहार्द' पुरस्कार 2लाख राशि सहित प्राप्त।

अनिल कुमार दास

संबलपुरी (ओड़िया) भाषा में अनवरत वैविध्यता पूर्ण लेखक

अनिल कुमार दास का जन्म ओडिशा के झारसुगुड़ा जिल के ब्रजराजनगर कस्बे के तेलनपाली गांव में दिनांक 07.05.1970 को माता श्रीमती पुष्पलता दाश एवं पिता श्री देवी प्रसाद दाश के घर हुआ। विज्ञान स्नातक होने के बावजूद साहित्य अनुराग के कारण आपने ओड़िया साहित्य में एम.ए. एवं एमबीए (मार्केटिंग) की उपाधि प्राप्त की संबलपुरी (ओड़िया) भाषा में अनवरत वैविध्यता पूर्ण लेखन (निबंध, कविता एवं कहानी आदि) ओड़िया भाषा की विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। एक दशक से सांप्रतिक संबलपुरी साहित्यिक अर्द्ध वार्षिक पत्रिका 'उदिआं' के संपादन के साथ साथ संबलपुरी भाषा का प्रचार-प्रसार में रत है।आपका संबलपुरी कविता संकलन 'सत सपन' (जिसका हिन्दी अनुवाद 'सत्य और सपनें' शीर्षक से दिनेश कुमार माली ने किया) और संबलपुरी निबंध संकलन 'अपहन्च सीमना' प्रकाशित हो चुके है।

डॉ. दिलीप मेहरा

आचार्य, हिन्दी विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय

डॉ. दिलीप मेहरा जन्म: 27 दिसम्बर 1968 , जनपद- खेड़ा, गुजरातशिक्षा: एम.ए. (स्वर्ण पदक), एम. फिल., पीएच.डी.सम्प्रति: आचार्य, हिन्दी विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगरप्रधान संपादक: साहित्य वीथिका, त्रैमासिक (अन्तर्राष्ट्रीय) प्रोजेक्ट: यू.जी.सी. का मेजर प्रोजेक्ट सम्पन्नपुरस्कार: नागरी प्रचारिणी सभा देवरिया द्वारा हिंदी भाषा एवं साहित्य के लिए नागरी रत्न (2015), भारतीय दलित साहित्य अकादमी, नई दिल्ली में अम्बेडकर फेलोशिप (2011). महाराष्ट्र दलित साहित्य अकादमी भुसावल से रवीन्द्रनाथ टैगोर लेखक पुरस्कार (2010). गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा 2019 में दलित संदर्भ और हिन्दी उपन्यास (आलोचना) प्रथम पुरस्कार और मकान पुराण (कहानी संग्रह) 2019 द्वितीय पुरस्कार प्रकाशित कृतियाँ :1. मन्नू भण्डारी की कथा साहित्य में मानव जीवन की नई निरुपमण 2. मननू भण्डारी का कथा- संसार 3. उपन्यासकार धर्मवीर भारती 4. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास 5. मध्यकालीन हिन्दी काव्य 6. हिन्दी: नए आयाम 7. मीडिया लेखन 8. दृश्य-श्रव्य माध्यम: विविध परिप्रेक्ष्य 9. हिन्दी कथा साहित्य में दलित विमर्श 10. हिन्दी महिला कथाकारों के साहित्य में नारी विमर्श 11. प्रेमचन्द के कथा साहित्य में सामाजिक सरोकार 12. वागंमय वाटिका के विविध रंग 13.दलित केंद्रित हिन्दी उपन्यास 14. आदिवासी संवेदना और हिन्दी उपन्यास 15 इक्कीसवीं सदी का गद्य साहित्य 16. हिन्दी उपन्यासों में किन्नर समाज 17. जल संस्कृतिन वाहक (गुजराती) 18. हिन्दी साहित्य में किन्नर जीवन 19. दलित संदर्भ और हिंदी उपन्यास 20. समकालीन हिंदी साहित्य में डॉ. पारुकान्त का योगादान 21. मकान पुराण (कहानी-संग्रह) 22. हिन्दी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श 23. हिन्दी कथा साहित्य में आदिवासी संवेदना।

डॉ. कृष्णा कुमारी

एम0ए हिन्दी, एम0ए अंग्रेजी व पीएच.डी हिंदी।

सम्मान-पूर्व शिक्षामंत्री गीता भुक्कल तथा स्वास्थ्य मंत्री राव नरेन्द्रसिंह द्वारा रक्तदान हेतु सम्मानित, राष्ट्रीय प्रतिमा रक्षा सम्मान समिति करनाल द्वारा 'शान ए हरियाणा' व 'शान ए हिंदुस्तान' अवार्ड, पंजाबी फैडरेषन फरीदाबाद द्वारा 'भारतीय महिला गौरव अवार्ड' व स्वतंत्रता दिवस 2014, गणतंत्र दिवस 2014 व गणतंत्र दिवस 2015 पर महिला सषक्तिकरण व बालिका सुरक्षा गतिविधियों के लिए जिला प्रषासन म0 गढ़ द्वारा सम्मानित। 11 जनवरी 2016 को केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति जुबिन इरानी द्वारा पीएच.डी डिग्री अवार्ड । गीता जयन्ति महोत्सव 2016 पर 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान' में उल्लेखनीय योगदान हेतु जिला प्रशासन द्वारा सम्मानित। सामाजिक कार्यों में सहभागिता हेतु साईकल सोशल क्लब, सड़क सुरक्षा संगठन व पुलिस प्रशासन द्वारा सम्मानित। सड़क सुरक्षा अभियान 2016 में उल्लेखनीय योगदान हेतु प्रादेषिक परिवहन प्राधिकरण नारनौल द्वारा सम्मानित। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2017 पर हरियाणा महिला आयोग व महिला एवं बाल विकास विभाग हरियाणा द्वारा सामाजिक सेवाओं हेतु 'शक्ति सम्मान'। 13 अप्रेल 2017 को आर्य युवक परिषद दिल्ली द्वारा 'हरियाणा शिक्षक गौरव सम्मान', स्त्री सम्मान समिति छारा द्वारा 7 जुलाई 2017 को 'नारी तुझे सलाम' अवार्ड से विभूषित । विलक्षणा एक सार्थक पहल समिति द्वारा 'समाज सारथी' सम्मान 26 जनवरी 2018 को जिला प्रशा सन द्वारा सड़क सुरक्षा योगदान व सामाजिक सेवा सम्मान। 8 मार्च 2018 अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर 'स्त्री शक्ति सरकारी कर्मचारी अवार्ड' से विभूषित। कीज क्लब हरियाणा व सक्षम हरियाणा द्वारा जिला स्तरीय गतिविधियों के लिए उत्कृश्ट कार्य प्रषंसा पत्र, राह ग्रुप फाउंडेशन, जिला प्रशासन महेन्द्रगढ़ व सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री हरियाणा द्वारा 'कोरोना योद्धा 2020 सम्मान से विभूषित एवं 2021 में जिला प्रशासन एवं शिक्षा विभाग द्वारा कोरोना योद्धा सम्मान दैनिक भास्कर समूह द्वारा सैल्यूट टू कोरोना हिरोज राज्य स्तरीय अवार्ड।

डॉ सी कामेश्वरी

भवंस विवेकानंद महाविद्यालय, सिकंदराबाद में असिस्टेंट प्रोफेसर
एवं भाषा विभागाध्यक्ष के रुप में कार्यरत रहीं

डॉ सी कामेश्वरी : Kameswari.sahitya@gmail.com हैदराबाद विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए, एम.फिल एवं पी एच डी की उपाधि प्राप्त की है। अनुवाद में पी जी डिप्लोमा और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से इन्होंने संस्कृत में एम.ए किया है। 33 वर्षों के अध्यापन में ये 26 वर्ष, भारतीय विद्या भवन, भवंस विवेकानंद महाविद्यालय, सैनिकपुरी, सिकंदराबाद में असिस्टेंट प्रोफेसर एवं भाषा विभा गाध्यक्ष के रुप में कार्यरत रहीं। गत वर्ष सितम्बर में सेवा निवृत्त हुई हैं। ये लेखन कार्य में अत्यधिक रुचि रखती हैं, आए दिन इनके सामाजिक लेख हिंदी मिलाप, गृहशोभा, सरिता पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहते हैं। जिज्ञासु स्वभाव के होने के कारण ये हमेशा हिंदी भाषा से इतर व्यवस्थापन कौशल, विज्ञान संबंधी विषयों की जानकारी प्राप्त करती रहती हैं और यथासंभव देश-विदेश में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठी में भाग लेती रहती हैं। सरल भाषा का प्रयोग करने के साथ-साथ विषय वैविध्य होने के कारण इनको दो बार अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में उत्तम प्रपत्र पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। इन्होंने अंग्रेजी, तेलुगू, हिंदी में अनेक कहानियों, उपन्यासों, का सफल अनुवाद किया है। हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में इनको आकाशवाणी, भारत पेट्रोलियम के हैदराबाद की विभिन्न शाखाओं में, हिंदी प्रचार सभा, ए. जी. एस ऑफिस, हैदराबाद, मुख्य अतिथि के रुप में आमंत्रित थीं। केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद, अनेक महाविद्यालयों, विद्यालयों में विषय विशेषज्ञ, विशेष अतिथि, अनेक मंचों पर निर्णायक के रुप में भी व्यवहार कर चुकी हैं। वर्ष 2000 में हरिता एसोसिएशन, महबूबनगर की ओर से बी. एन. शास्त्री मेमोरियल अवार्ड, वर्ष 2014 में लायंस क्लब (316 E), चेरलापल्ली, हैदराबाद ने 'उत्तम अध्यापक' पुरस्कार प्रदान किया, वर्ष 2020 में ए. के. एस. ग्लोबल अवार्ड के लिए इन को चयनित किया गया, वर्ष 2021 में आई.एल.डी.सी – ए.एम.पी ने हिंदी साहित्य में इनकी उपलब्धियों के लिए 'उत्कृष्ट महिला पुरस्कार' प्रदान किया। वर्तमान में ये श्री रामचरित भवन, ह्यूस्टन द्वारा आयोजित अनेक कार्यक्रमों में सक्रीय रूप से भाग लेती रहती हैं और उनके द्वारा सम्पादित अनेक पत्रिकाओं की सम्पादक मंडल की सदस्या रहीं, मध्यस्था निभाई, समीक्षा समिति की सदस्या भी रहीं हैं। अपने महाविद्यालय में समय - समय पर इन्होंने अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय गोष्ठियों, कार्यशालाओं, संकाय विकास कार्यक्रमों का आयोजन भी किया है

प्रोफेसर अमर ज्योति

विभिन्न वि.वि. में पीएच.डी. परीक्षक। एम. फिल. और पीएच. डी. निर्देशक

प्रोफेसर अमर ज्योतिः शिक्षा - एम.ए., एम.फील. पीएच.डी., उस्मानिया वि.वि. नेट, अनुवाद डिप्लोमा। विभिन्न पदों पर कार्य कियाक्षेत्रीय निदेशक-दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, द.भा.हि.प्र.सभा, सम्पादक-भारतवाणी (कर्नाटक) द.भा.हि.प्र. महासभापुरस्कार - प्रतिभावान छात्रा -1992, .पं. गौरी शंकर शुक्ल स्मृति सम्मान-2016 , साहित्य दर्शन-2020। अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लिया। विशेष रूप से- 2018 में रूस के तीन शहरों में कजान, मास्को, सेंटपिटर्सबर्ग में। 27 वर्षों का अध्ययन अनुभवा 60 लेख और दो पुस्तकों की रचना। विभिन्न वि.वि. में पीएच.डी. परीक्षक। एम. फिल. और पीएच. डी. निर्देशक। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद और विदेश मंत्री सुषमा स्वराज जी ने संचालन कार्य की प्रशंसा की।

अनुपमा तिवारी

अनुकर्ष (त्रिभाषी, त्रैमासिक पत्रिका)।सम्प्रतिः अलायंस विश्वविद्यालय, बैंगलोर, कनार्टक

अनुपमा तिवारी जन्म: मीरजापुर, उत्तर प्रदेशशिक्षा: एम.ए. (हिंदी, अंग्रेजी), एम. फिल., पीएच. डी., डिप्लोमा इन ट्रांसलेशन (अंग्रेजी-हिंदी) डिप्लोमा इन जर्नलिज़्म। प्रकाशित पुस्तकें : मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियां, सामाजिक यथार्थ और कथा भाषा (2017), विवेकी राय कृत चली फगुनहट बौरे आमः लोकतत्व (2016), प्रवासी हिंदी साहित्यः बदलते तेवर (2018) 'प्रवासी हिन्दी कविताएं, सृष्टि और दृष्टि (2021) 'हिन्दी साहित्यः समकालीन संदर्भ' (2021)लेख: 50 से अधिक लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित ।संपादित : अनुकर्ष (त्रिभाषी, त्रैमासिक पत्रिका)।सम्प्रतिः अलायंस विश्वविद्यालय, बैंगलोर, कनार्टक।

डॉ. सुनीता प्रेम यादव

औरंगाबाद में हिंदी शिक्षिका के पद को सुशोभित

डॉ. सुनीता प्रेम यादव आप मूलतः रहने वाली ओडिशा की रहने वाली है, मगर औरंगाबाद में हिंदी शिक्षिका के पद को सुशोभित रही हैं। आप की शैक्षिक योग्यता खलीकोट कॉलेज बरहमपुर यूनिवर्सिटी ओडिशा से हिंदी आनर्स में बी. ए, हैदराबाद विश्वविद्यालय से एम.ए, एम. फिल; भारतीय शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश से बी. एड.,एम. एड. और पीएचडी की डिग्री भी एएमयू औरंगाबाद से प्राप्त की है। आप बहुत अच्छी उद्घोषिका भी हैं। अनेक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों जैसे आदर्श शिक्षक पुरस्कार, जॉर्ज फर्नांडिस पुरस्कार, भाषा भूषण पुरस्कार, शमशेर अहमद खान बाल-साहित्य पुरस्कार, परिकल्पना सार्क सम्मान, एन ग्लोबल सिटीजन अवॉर्ड, डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम एक्सिलेन्स इन एजुकेशन अवॉर्ड से सम्मानित हैं ।

डॉ. नीलम हेमंत विरानी

दादासाहेब धनवटे नगर विद्यालय महल,नागपूर में अध्यापिका

डॉ. नीलम हेमंत वोरानी शैक्षणिक पात्रता : एम.ए (हिन्दी अर्थशास्त्र), एम.फिल. बी. एड. नेट. पी-एच.डीपुस्तकें:- मुक्तिबोध एक चिंतन, गुरु गोबिन्द सिंह साहित्यिक रचनाएँ और सामाजिक उत्थान आर्यवाणी (पर्यावरण संरक्षण को समर्पित) आदि पुस्तकें प्रकाशित एवं भाषाओं पर आधारित पत्रिका 'लिटरेरी वाइस, के अनेक भागों का सम्पादन। शोधपत्र:- नयी कविता की आलोचना और रामविलास शर्मा (डॉ. रामविलास शर्मा : जनपक्षधरता की वैचारिकी), लोक आस्थाओं के कवि केदारनाथ सिंह, सुभद्राकुमारी चौहान की कहानियों में सामाजिक चेतना, त्रिलोचन और अरघान, मुक्तिबोध का 'विपात्र', युगप्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती, भारतेंदु हरिश्चंद्र और परंपरा, पर्यावरण सुरक्षा जीवनरक्षा। सहभागिता :- अनेक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं में सहभागिता में सहभागिता। संप्रति :- दादासाहेब धनवटे नगर विद्यालय महल,नागपूर में अध्यापिका

अशोक कुमार पूजाहारी

आंचलिक कॉलेज, पहाड़श्रीगिडा, बरगढ़ में राजनीति शास्त्र के व्याख्याता

अशोक कुमार पूजाहारी: हलधर नाग के बेहद करीबी माने-जाने वाले अशोक कुमार पूजाहारी, आंचलिक कॉलेज, पहाड़श्रीगिडा, बरगढ़ में राजनीति शास्त्र के व्याख्याता है। हलधर की जन्मभूमि घेस की साहित्यिक संस्था 'अभिमन्यु साहित्य संसद' के संस्थापक सदस्य एवं पूर्व सचिव और अध्यक्ष; शहीद कुंजाल सिंह क्लब (घेस के महान शहीदों की स्मृति के लिए काम करने वाली संस्था) के अध्यक्ष; दुलाबिहा संस्कृति परिषद (पश्चिमी ओडिशा के लोक कला और नृत्य पर आधारित संगठन, जिसमें हलधर नाग 20 से अधिक वर्षों से टीम का नेतृत्व कर रहे हैं) के संस्थापक;संबलपुर विश्वविद्यालय के पूर्व सीनेट सदस्य हैं। संबलपुरी कविता-संग्रह .' उकिया अदके पाते' प्रकाशित हो चुका है। साहित्यिक गतिविधियों में भी आपका अनुकरणीय योगदान रहा है। जिला लेखक मंच के पूर्व कार्यसमिति सदस्य होने के साथ-साथ .विभिन्न जावलंत मुद्दों पर कविताएं, लघु कथाएं और संबलपुर विद्रोह के शहीदों पर कई आलेख विभिन्न समाचार-पत्रों और समय-समय पर प्रकाशित हुए हैं। पिछले 30 वर्षों से पश्चिमी ओडिशा के लेखकों और कलाकारों को प्रोत्साहित और बढ़ावा देना एवं साहित्य, संस्कृति और विशेष रूप से हलधर के लिए साहित्यिक पृष्ठभूमि बनाने के लिए प्रतिबद्ध रहे । संबलपुर विश्वविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'शब्दलिपि' और घेस की नियमित पत्रिका 'बाउल' के अतिरिक्त अनेक साहित्यिक पत्रिकाओं का संपादन किया। सामाजिक और शैक्षिक क्षेत्र में 'भारत ज्ञान विज्ञान समिति' के रिसोर्स पर्सन, छात्र जीवन में वाद-विवाद एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता में पुरस्कृत तथा ई राज्य और राष्ट्रीय स्तर की अनेक बैठकों और संगोष्ठियों में सहभागिता याद की है। सुंदरगढ़ जिला प्रशासन द्वारा सर्वश्रेष्ठ सांस्कृतिक आयोजक के रूप में सम्मानित किया गया। युवा निर्माण नीति के नेशनल सेमीनार में संबलपुर विश्वविद्यालय की ओर से प्रतिनिधित्व किया ।

Pondicherry University

Pondicherry University (A Central University) established under an Act of Parliament in the year 1985 is located in Puducherry. The university has 15 Schools, 37 Departments and 10 Centres offering 175 Post Graduate and Research programs. The university has all the state-of-the-art facilities in all the Schools and Departments paving the way for the students to have a student-friendly, result-oriented academic environment with green ambience. The University has four campuses. The Main Campus is located at Puducherry and the other three off-campuses are located at Mahe, Karaikal and Port Blair. The University has made a giant leap in promoting usage of Information & Communication Technology (ICT) products/ services in the areas of teaching / learning, research and administration. The Ananda Rangapillai Library at the University has a collection of more than 2- lakh books and over 25,084 e-journals, 7,455 e-books, 36 e-databases and 620 e-thesis. It offers rent-free accommodation to all girl students and provides totally-free education to all the differently abled students.

Department of Hindi

The Department of Hindi was established in 1993. The Department offers quality education programmes and it facilitates intensive study and research in different areas of Hindi Language and Literature and its applied and functional aspects such as translation, media, comparative studies, language technology, contemporary discourses, etc. The syllabus of the Department is based on the Model Syllabus of University Grants Commission and is updated from time to time in consultation with experts with due approval of academic bodies. Faculty members of the department have designed and floated courses on contemporary relevance and emerging areas which are offered as optional and soft core courses. Some of these courses are interdisciplinary in nature and aimed to nurture the skills of the students for their career development. Some of the courses are offered in English medium too. The Department plays a vital role in spreading E -Literacy in the area of computing in Indian Languages and adopting innovative practices in teaching, learning and evaluation process. ICT integrated teaching, seminars, interactive classes, group discussions, internal and external assessment practices are enriching the teaching and learning. The Department also plays a vital role in developing MOOCs, which provides opportunity to many for open online-learning and blended learning experience to campus students.

6-7 फरवरी, 2021 को पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेखों का संकलन

6-7 फरवरी, 2021 को पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेखों का संकलन 'हलधर नाग के लोक-साहित्य पर विमर्श' के शीर्षक से पांडुलिपि प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुआ है जिसका संपादन डॉ. सी. जय शंकर बाबु तथा श्री दिनेश कुमार माली ने किया है । इस कृति का पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति आचार्य गुरमीत सिंह जी के करकमलों से विमोचन के अवसर उनके साथ उपस्थित हैं हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सी. जय शंकर बाबु

***

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रतिभागिता एवं इसे सफल बनाने हेतु सभी सादर आमंत्रित हैं
All are cordially invited to participate the International Seminar and make it success

*****वृक्षो रक्षति रक्षितः*****